# गीता मैत्री

JULY- DECEMBER 2022



LEARN GEETA

तस्मात् योगी भवार्जुन

॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

## संस्थापक अध्यक्ष

प.पू. स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज

## कार्याध्यक्ष

डॉ. संजय मालपाणी, संगमनेर

## उपाध्यक्ष

श्री हरिनारायण व्यास
डॉ. आशू गोयल
आ. प्रमिला माहेश्वरी
श्री गोविंद माहेश्वरी
श्री संदीप माहेश्वरी

## कोषाध्यक्ष

श्री महेन्द्र काबरा

## सचिव

श्री श्रीकांत कासट

## सह सचिव

श्री गिरीश डागा

# गीता मैत्री

A Learngeeta Six Monthly Newsletter

## मुख्य संपादक

डॉ. आशू गोयल

## सह संपादक

सुश्री कविता वर्मा

## लेखक एवं संकलनकर्ता

सौ. कविता तापड़िया – अहमदाबाद
सौ. सोनाली काला – पुणे
सौ. ऊषा प्रसाद – बंगलुरू
श्री सुनील कापडी – मुम्बई
श्री यतीश विजयवर्गीय – कोटा
श्री रमेश राटेरिया – कोलकाता
श्री लखन राठौर – पुणे

## मुख्यपृष्ठ

सुश्री कश्मीरा, ठाणे

## ई-बुक डिजाइनर

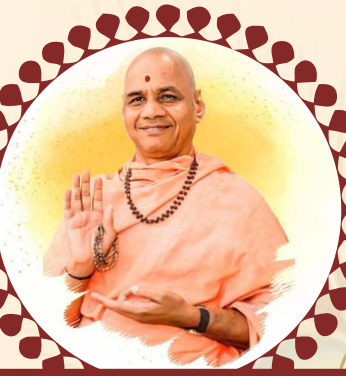
सुश्री शिप्रा सिंह
Excel Electrostat, Lucknow.



# अनुक्रमणिका


- संत उद्गार - प. पू. स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी 1
- गीता जीवन में लायें - डॉ. संजय मालपाणी 2 - 3
- समष्टि में व्यष्टि - डॉ. आशू गोयल 4 - 5
- विभिन्न समारोह 6 - 18
- गीता चिन्तनिका सत्र 19 - 25
- भगवद्गीता व्याकरण कक्षायें 26 - 28
- गीता मैत्री मिलन समारोह - मुम्बई 29 - 30
- सरल पठनीय श्रीमद्भगवद्गीता पुस्तक विमोचन 31 - 32
- गीता जयन्ती उत्सव 33 - 34
- आओ गीता सेवी बनें 35
- भगवद्कृपा का प्रत्यक्ष दिग्दर्शन 36
  श्री अशोक जी शर्मा, ऋषिकेश
- ऑनलाइन भगवद्गीता - जीवन की सार्थकता 37 - 38
  श्रीमती विजया गोडबोले, लखनऊ
- Sparkling Hearts 39 - 43
- स्वामीजी का दिव्य नाम 44
- जेल में गूँजे गीता के श्लोक 45 - 46
  श्रीमती अंशू जी गर्ग, दिल्ली
- Finished L4 classes? What next? 47 - 49
  Shri Sunil Kapdi, Mumbai
- आओ गीता खेलें 50 - 52
- Volunteer's Brigade 53
- कार्यकर्ता मनोगत 54 - 58
- गीताव्रती 59 - 69
- आंकड़ों की नज़र में... 70

# सन्त उद्गार



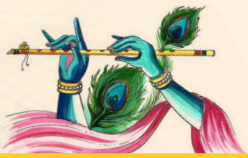
प.पू स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज
संस्थापक अध्यक्ष गीता परिवार
कोषाध्यक्ष रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास

हमारी भूमि वेदों से जानी जाती है जहाँ आदि शंकराचार्य का जन्म हुआ। यहाँ मात्र एक परिवार की बात नहीं होती है किन्तु सम्पूर्ण विश्व को ही एक परिवार के रूप में बताया जाता है। वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् सम्पूर्ण वसुधा ही हमारा परिवार है। वह केवल यहाँ तक नहीं रुकते किन्तु हम सभी एक ही तत्त्व हैं। हम सब एक हैं। यहाँ 'वह' और 'तुम' शब्द नहीं हैं, किंतु यहाँ सदा 'हमारा' ही है। अतः किसी के द्वारा किसी के लिये किया गया गलत कार्य उस व्यक्ति के स्वयं के लिये ही होता है।

वेदों में कहा गया है - **आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।** अर्थात् हमारे लिये सभी ओर से कल्याणकारी विचार आयें। उन सभी विचारों को हमें सुनना चाहिये एवं जीवन में उतारना चाहिये। शायद सभी संप्रदायों की भाषायें भिन्न-भिन्न हो सकती हैं किंतु मूल विचार सबका एक ही है और यह विचार कुछ इस प्रकार से कहा जा सकता है जैसा कि हम संस्कृत में बोलते हैं।

**ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।**
**सर्वे भद्राणि पश्यन्तु , मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्॥**

अर्थात् सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी का जीवन मंगलमय बनें और कोई भी दुःख का भागी न बने। वैदिक विचार व्यक्ति, समाज, प्रकृति और परमेश्वर में संतुलन की बात करते हैं। और यह संतुलन योग कहलाता है। आज हमें सभी साम्प्रदायिक विचारों को संतुलित करना है। अतः हमें आज साथ आना है। जिस प्रेममय, ज्ञानमय, परस्पर सकारात्मक भावों एवं एकता वाले विश्व की कल्पना ज्ञानेश्वर माऊली ने की, ऐसे नये विश्व की हम स्थापना करेंगे। यह हमारी प्रार्थना या अपेक्षा नहीं किन्तु यह हमारा लक्ष्य है।



# गीता जीवन में लायें



डॉ. संजय मालपाणी

**सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।**
**अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।18.66।।**

इस श्लोक को पढ़ते समय अनेक प्रकार की आशंकायें मन में उठती हैं। क्या भगवान हमें अपने धर्म का त्याग करने को कह रहे हैं? क्या धर्म का त्याग करने पर पाप मुक्ति संभव है? क्या यही मोक्ष का मार्ग है? फिर जब भगवान संपूर्ण भगवद्गीता में धर्म की राह पर चलने की शिक्षा दे रहे हैं तो फिर अंतिम अध्याय में भगवान धर्म का परित्याग करने को क्यों कह रहें हैं? यह कैसा विरोधाभास है?

हम जिसे धर्म समझते हैं, वह हिंदू-मुस्लिम-क्रिश्चियन ऐसी धर्म की व्याख्या गीता को अभिप्रेत नहीं। धर्म का सीधा सा अर्थ कर्तव्य की राह पर चलना ऐसा है। जीवन के अन्यान्य पड़ावों पर अलग-अलग कर्त्तव्यों का निर्वाह मनुष्य को करना पड़ता है। विद्यार्थी धर्म, पुत्र धर्म, गृहस्थ धर्म, मातृ-पितृ धर्म, व्यवसाय धर्म, राष्ट्र धर्म इत्यादि धर्मों के पथ पर मानव चलता रहता है। एक बात यहाँ ध्यान में रखने की है कि हर धर्म के निर्वाह में अहंकार भी मन में प्रवेश करता है। जैसे विद्यार्थी धर्म के पालन में अच्छे गुण आते हैं तो अनायास व्यक्ति के मन में अहंकार आता ही है। परन्तु जहाँ अहंकार हो वहाँ प्रभु का अस्तित्व नहीं हो सकता। संत कबीर दास जी ने लिखा हैं-

**जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहीं।**
**प्रेम गली अति सांकरी, जामें दो न समाहीं ॥**

मन की एक विशेषता है, उस में एक समय दो बातें नहीं रह सकती। विचार भी एक समय पर एक ही रहता है। जब एक विचार चला जाता है तभी दूसरा विचार अंदर प्रवेश करता है।

'प्रेक्षा' का अर्थ है, प्रेक्षक की भाँति देखना! बिना किसी प्रतिक्रिया के केवल अवलोकन करना। श्वास प्रेक्षा से विचारों की गति धीमी हो जाती है। संवेदन प्रेक्षा से हमें अपने शरीर में उठने वाली संवेदनाओं

के क्षणभंगुर होने का अनुभव मिलता है। इसके पश्चात् जब हम विचार प्रेक्षा करते हैं तब दो विचारों के बीच में एक शून्य होने का अनुभव प्राप्त होता है। इसी विधा को अष्टांग योगशास्त्र में धारणा कहा गया है। जैसे ही मन की शून्यावस्था की अवधि बढ़ती जाती है, वैसे ही उस खाली जगह में ईश्वर प्रणिधान करना, यही ध्यान का आरंभ है।

विचार ही विकारों को जन्म देते हैं। विकार पाप कर्म के लिये प्रवृत्त करते हैं। विचारों की गति के कम होते ही विकार कम होते जाते हैं। विचारशून्यता विकारशून्यता की पहली सीढ़ी है। जैसे ही मन का अहंकार कम होता है और शून्य मन में ईश्वर को प्रतिष्ठित किया जाता है वैसे ही शरणागति घटती है। पाप मुक्त बनने का यही सरल उपाय है। अंत समय में इस प्रकार मन शून्यावस्था में रहे, संवेदनाओं के क्षणभंगुर होने का तथा उनके प्रति कोई प्रतिक्रिया न देने का अभ्यास हो, तो शरीर की पीड़ा कष्टप्रद नही लगती। ऐसे में मन विमुक्त होकर आत्मा मोक्ष गति को प्राप्त होता है।

इस एक श्लोक में गागर में सागर भरा हुआ है। संपूर्ण भगवद्गीता योगशास्त्र है। सारे कर्म भगवान को अर्पण करते हुये फलाकांक्षा का त्याग करें तो मन में सदैव संतुष्टि की भावना बनी रहती है। सहज स्वीकार और समाधान ही योगी की पहचान होती है।

**'संतुष्टः सततं योगी'**

यह योगी का परिचय भक्तियोग में दिया गया है। इस विचार को सार्थक करने वाला यह श्लोक यदि जीवन में उतरता है तो जीवन का कल्याण सहज संभव है। इसीलिये गीता परिवार का यह घोष है -

**'गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें'**



संपादकीय

# समष्टि में व्यष्टि



डॉ. आशू गोयल

गीता मैत्री वास्तव में गीता से मैत्री करने वालों के लिये एक ऐसा मंच है जहाँ वृत्तियों का शुभ से मिलन होता है। ये वृत्तियाँ सभी में किसी न किसी रूप से विद्यमान रहती हैं किन्तु जैसे लकड़ी में विद्यमान होते हुये भी अग्नि को व्यक्त होने हेतु पत्थर के घर्षण आदि निमित्त की आवश्यकता होती है वैसे ही यहाँ भी मैत्री के भावों को शब्दांकित करने का प्रयास ही इस गीतामैत्री न्यूजलेटर का मूल चिन्तन है जिसमें व्यष्टि विचारों को गीता चिंतन रूपी घर्षण से समष्टिगत किया जा रहा है। भगवद्गीता हमें **"तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च"** का व्यष्टि उपदेश के साथ **"सर्वभूतहिते रता:"** का समष्टि उपदेश भी देती है।

सर्वभूतहिते रता: की भावना को भगवान ने इतना महत्त्व दिया कि पाँचवें अध्याय के बाद बाहरवें अध्याय में इसकी पुनः आवृत्ति की है। सर्वभूतहिते रता: में 'सर्व' के अन्तर्गत 'स्व का हित' भी सम्मिलित है। सर्वभूतहिते रता: 'स्व' और 'पर' का संगम है अर्थात् स्वार्थ(स्वयं का हित) और परमार्थ(अन्य का हित) दोनों का संगम है।

एक बार एक गृहस्थ ने एक साधू से कहा- महाराज हम तो पापी हैं, केवल स्वार्थ की बात जानते हैं, आप तो परमार्थी हैं। साधू ने कहा - भाई तू स्वार्थ को ठीक से समझता नहीं, अगर तुम स्वार्थी हो तो हम दोगुने स्वार्थी हैं। स्वार्थ में परमार्थ निहित नहीं परन्तु परमार्थ में स्वार्थ निहित होता है। हम अपने कल्याण के लिये भजन साधन तो करते ही हैं, साथ में जो परहित हेतु भी जो उपदेशादि करते हैं वह भी तो स्वयं के लिये ही करते हैं। जैसे सुगंधी बांटने वाले को सुगंध की प्राप्ति स्वत: ही हो जाती है, ऐसे ही दूसरे का कल्याण करने वाले का कल्याण भी स्वत: ही होता है।

'गीता मैत्री' के विचारपुष्प का मूल उद्दिष्ट 'व्यष्टि से समष्टि' की एवं 'बिन्दु से सिन्धु' की यात्रा है। हम गीता

से मैत्री कर उसके उपदेशों को आत्मसात कर अन्य भाई-बन्धुओं को भी अपने साथ लायें एवं अपनी गीता मैत्री को विस्तारित करें, यही हमारा उद्देश्य है। वैसे तो हमारी मैत्री लौकिक है किन्तु जब गीता के माध्यम से वह मैत्री होती है तो उसमें एक महान उद्देश्य, उच्चतम गुण एवं आदर्शों का समावेश हो जाता है और वह लौकिक मित्रता भी अलौकिकता की मधुर सुगन्धी से भर जाती है।

जिस प्रकार गन्धहीन जल भी पुष्प के साहचर्य से सुगंधित हो उठता है उसी प्रकार गीता के द्वारा मैत्री होने से मैत्री शब्द दैदीप्यमान हो जाता है एवं उस दिव्य प्रकाश से साधकों का मार्ग प्रशस्त होने लगता है। आइये हम इस व्यष्टि से समष्टि की यात्रा में संलग्न होकर गीता मैत्री के पथ पर अग्रसर हों तथा स्वयं के साथ सबके कल्याण के निमित्त बनें।

|| इति ||

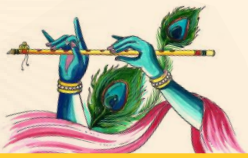
**आप किसी भी भाषा में अपने लेख, चित्र, अन्य प्रकाशकीय सामग्री newsletter.geetamaitri@gmail.com पर प्रेषित कर सकते हैं। चुनी हुई प्रविष्टियों को अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।**

**You can send your articles, drawings and other material in any language on email id newsletter.geetamaitri@gmail.com. Selected entries will be published in next edition.**



LEARN GEETA

तस्मात् योगी भवार्जुन



# विभिन्न समारोह

## जुलाई स्तर–1 (L-1) – 19वाँ बैच

https://youtu.be/kyTRlh-MZMM

The inaugural ceremony of the 19th batch of L1 under the LearnGeeta mission took place with the blessings of our most revered Swami Govind Dev Giriji Maharaj and Haribrahmanand Tirtha ji Maharaj of Uttarkashi Shankaracharya Math. After the traditional lighting of lamp and introductory speech; Swami Govind Dev Giri ji Maharaj was called upon to bless the new sadhaks by sharing some of his pearls of wisdom.

Swamiji said, indeed how blessed we all are to have such well-versed, dedicated to the cause of safeguarding our sacred scriptures, Haribrahmanand Tirtha Maharaj who willingly agreed to be a part of the Learngeeta program that has taken up this task for us to connect with our true and enriched shastras by learning Geeta.

Swamiji in his speech praised the selfless efforts put in by the 5000 odd sevis on a daily basis with precision and commitment almost round the clock to accomplish the vision of “Har Ghar Geeta, Har Kar Geeta”. He applauded their efforts by saying all these sevis indeed have surrendered to Geeta by making it their way of life.

He emphasized the need of learning Geeta by one and all. He dwelled on the benefits of reciting, memorizing and imbibing Geeta; how it enhances one's personality, brings about a positive change in attitude and also how it adds new dimensions to our perceptions. He further added, after initial recitation and memorization how the sadhaks could gain in-depth understanding of Geeta through the weekend interpretations by the highly knowledgeable and well versed interpreters, which fulfills the third step of the motto Imbibing Geeta and making it their way of life.

He said, we all worship the idol of Krishna, but this is a higher form of worshipping Krishna residing in our hearts by learning and imbibing Geeta. He emphasized the need to learn the recitation of Geeta in its original form; for they are the spoken words of the Divine Himself and in fact they are not just verses but are mantras that carry significant value in enhancing one's life if pronounced perfectly and with steadfast devotion.

He asked Haribrahmanand Tirtha Maharaj to share his sentiments on learning Geeta by one and all.

Haribrahmanand Tirtha Maharaj ji expressed his awe at the vision of LearnGeeta by our Swamiji turning into a reality on such a gigantic scale reaching far and wide not just nationally but globally too. He further stated that, almost 5 lakh sadhaks engaged in

learngeeta program till date is a near impossible task, yet, accomplished successfully in such a short and trying times. He said, spreading the glory of Geeta by making it a way of life across the length and breadth of the globe is an unbelievable achievement.

He showered his blessings on the sadhaks, sevis and the entire Geeta Pariwar also adding that, the blessings of all the Saints, holy people and above all The Divine is with them.

He then quoted from the Bhaja Govindam, of Saint Adi Shankaracharya, which emphasises that everyone should take a dip in the vast Ocean of Geeta; which would enrich one's life.

He said, upholding of our Great Scriptures is not happening the way it should be as, change is inevitable and one has to take it in stride; yet, he could see the beginning of new dawn, where our scriptures, our culture, will regain their rightful place, thanks to the Vision of our Swamiji that turned into a mission of bringing back the misplaced glory through the seeds sown by LearnGeeta program.



# अगस्त स्तर–1 (L-1) – 20वाँ बैच

https://youtu.be/sxJgsfkp2Hc

The inauguration Ceremony of the 20th Batch of Geeta Parivar L1 Learners, took place on 20th Aug, under the divine Guidance of Lord Sri Krishna & countless gurus.

Dr Ashu ji Goyal extending his warm welcome to all gave a brief about Geeta pariwar and its functioning.

Further explaining about the intricate structure & working of Geeta Parivar, he brilliantly showcased the opportunity grabbed by & the efforts undertaken, by 4000 Karyakartas of Geeta Pariwar, globally.

Speaking of the Study structure @Geeta Pariwar, he emphasised on 3 points which are, Mukhasth, Kanthasth & Hridayasth of the mantras

1. Mukhasth: being vocally fluent during the utterance of the holy Bhagwad Geeta Mantras.
2. Kanthasth : knowing the mantras by-heart.
3. Hridayasth: the mantras must be there in our heart, respectfully, knowing the meaning of it.

Regarding the study materials provided during the period of course, he told about the;

1. PDFs shared with the students
2. Books available of Bhagvadgeeta ; Geeta Pariwar and Gorakhpur press.
3. Audio, Video, multiple other formats information, explanations available just by scanning the QR Code of the books @ also it is accessible from their website, viz. help.learngeeta.com

**Their helpline number is : 18002036500**

There would be a whatsapp group in which all the participants would be added, naming of which would be a combination of the (Batch no) Level no.- Month Timing – (Language) GEETA

For example: (304) L1 Oct 6AM – (H) GEETA, in which any particular student is put into, based on their preferences (time preference, language selected, which level they are in)

The whatsapp group's description is inclusive of everything needed, links, etc. In these

WhatsApp groups, including students, teachers/gurus (who will be the group admins). As a Policy, the Sadhaks are Requested not to post any unrelated messages or forward any messages in the class WhatsApp group. They are encouraged to ask their queries, submit their recitation audios for further corrections on the class WhatsApp group.

One humble request would be to not call any of the admins/sevis as they would be very busy, however they could send their queries through WhatsApp and get early resolution.

Gita Visharad and Sevabhavi Dr. Ashu ji Goyal gave the above information/instructions to L1 participants, he heartily welcomed each one of them and requested Dr. Sanjay Ji Malpani to address the gathering. Respected Sanjay ji Welcomed all.

Dr. Ashu Ji Goyal, after paying obeisance to the Supreme and the Gurus, shared the glorious past and the Great work being done By Geeta Pariwar form the past 33 years and how they will continue doing with the ever powerful energy and motivation given by the Saints.

He further elaborated the "opportunity in disaster" approach taken during the turbulent times of COVID-19, where under the able guidance and motivation of His Holiness Swami Govind Dev Giriji Maharaj, A new Dimension was added to Geeta Pariwar in form of LEARNGEETA the Online Geeta Classes. Initially expected to have only around 500 Sadhaks, how they go overwhelming responses touching 10,000 and its ever growing.

He further Added that its only Krishna Krupa, that these Online Classes are conducted seamlessly, where daily 1000 classes are being Run online. He welcomed the 22 thousand Sadhaks, reassuring them not to fear, even if they do not know Sanskrit.

His Holiness Swami Govind Dev Giriji Maharaj bestowed his blessings on one and all.

Swamiji said his Amrit Mahotsav will be successful in the right sense only if Gita Ji reaches Every home and is in Every hand. He also praised Swami Vimarshanandji on his brilliant efforts of Spreading the Light of Gita ji in the state of Rajasthan. He further congratulated him on the publishing of "Nutan Gita" an easy to read Gita ji with Inbuilt techniques of learning and Reading Gita Ji.

Swami ji remembered Gormast Pujiya Swamiji, who left us all for heavenly abode, who always believed in a strong and a determined nation, an who kept chanting the Shlokas of Geetaji in his last moments

To realise the AKhand Bharat dream; imbibing Bhagavad Geeta is of utmost importance. Giving another example of Adi Shankaracharya, & how he united entire Bharat, in Sanskrit, Geeta does the same he said.

Swami Vimarshanand ji the Guest of honour for this ceremony enlightened all with a few drops from the ocean of his enriched knowledge.

He emphasised, today if we are celebrating this Amrit Mahotsav, due credit is to be given to the Sanatan Dharma, for keeping us on the right path from Yugas/ages, teaching us the right things.

Being thankful for everyone's devotion for Geeta & Gurujis', he said, Geeta is not just a book but it is about the Creation, about the compassion of the Supreme; that he bestowed on us this knowledge through HIM, in a war zone/field. It is amazing, how Geeta teaches us to be like a child, like a teacher.

Further, swami Vimarshanandji , Giving the example of Arjuna's situation described how Gita Ji would be helpful for the youth of today when in dilemma. In the battlefield, when Arjuna Asks Lord Krishna to steer him to such a vantage point to so as to see who his enemies Were , Lord Krishna realised that ego was taking over Arjuna; so HE positioned the chariot at a place where Arjuna could see his own gurus, elders and siblings as his opponent, Arjuna is shattered and loses his will to fight.

Swami Vimarshanandji also reiterated that only a Strong and determined nation can keep its people, its culture, knowledge, legacy, safe. He also advised that we all must read and study Gita Shlokas every day ,in any form, like writing or singing or any other way.

Swamiji also underlined an important point that we must totally and fully give in to our GURU and become a child, modest & obedient.

Swami Vimarshanandji ,in his address, said that for knowing Gita ji we must understand Karma Yoga, 5 Key takeaways from Swamiji's address are:

1. I am the sevak/worker of Ishwar
2. I am appointed by the Supreme.
3. I am doing it to please HIM & for HIS acceptance.
4. Do all our karma/work , using all our might
5. Give the fruit to the Lord/surrender to him after doing the karma.

Swamiji then envisioned Gita ji to Reach every one including the children who could unlock the "ARJUNA" within. He then concluded his address by reciting the Maha Mrityunjay Mantra.



# अगस्त स्तर–2 (L-2) – 19वाँ बैच

https://youtu.be/wHEGQ3Hjipw

Opening ceremony of the 19th batch; August L2 was another feather added in Geeta Pariwar's journey of “Har Ghar Geeta, Har Kar Geeta”.

Dr. Ashu ji Goyal (Director, LearnGeeta) Congratulated the sadhaks on the successful completion of Level 1 and moving ahead in the journey of competing All the four levels "the CHAR DHAM YATRA". The 36 years long journey of Geeta Pariwar; under the blissful guidance of Param Shraddheya Swamiji was restated by him.

He then explained how reciting these shlokas with accurate pronunciation have multiple benefits. He then assured the Sadhaks of the wonderful change they will experience in the coming months after starting the L2.

Ashu Bhaiya Further, with an analogy of pre-Primary and Primary, explained how scientifically the whole Program has ben designed. He also mentioned about the memorization exams which start from the Level 2. Memorizing is a step towards immersing once sole in Geeta Gyan Ganga, he stressed.

Ashu Bhaiya then Requested Respected Dr. Sanjay Malpani ji (National President ,Geeta Pariwar) to address the gathering and share his thoughts. Respected Sanjay ji, after extending his warm welcome to all, talked about the CHAR DHAM Yatra and its Similarity with the FOUR LEVEL Course structure, he explained these with the four Main Points :

1. Both are ways of offering Salutations to the Lord himself.
2. Just like the char dham Yatra, Bhagvadgeeta transforms lives, the Bagvad Yatra purifies the soul.
3. He gave a thoughtful paradigm of Geeta ji as " Mann ka Beauty Parlour”
4. While returning from Char Dham Yatra, Kedarnath, Badrinath, Gangotri & Yamunotri, we all, amidst the constantly changing weather, changing landscapes, go thru a life transforming experience , similarly, Gita Ji's Char Dham Yatra (Four Levels), brings about thos changes in our SOUL.

He further described Geeta as mind's beauty parlour. Each one goes to the parlour for a different purpose, some for hair treatments, some for facial, and so on.

Elaborating on his Analogy of " Gita ji Mann Ka Beauty parlour" he explained how Gita ji helps at two different levels 1. Doshapanayan 2.Gunadhaan.

1. Doshapanayan, when explained, is removal of old offerings like Flowers, Chandan tilak , haldi, old naivedya etc.
   Doshapanayan is also similar to Beauty parlour, where they cut the old hair, nails, dead cells, etc.
2. Gunadhaan is simply, offering new flowers, cleaning the idol, applying new Chandan tilak, puting new set of clothes etc

He further explained how Geeta does both Doshapanayan & Gunadhaan & how it is more relatable specially after starting the 16th Chapter in 2nd Level. Geeta acts as a remover of asuri gunas & awakening the satva guna.

In Geeta, The Supreme has described all the 3 gunas. Hence, Geeta acts as a remover of Asuri gunas & awakening the sattva guna.

What exactly is Doshapanayan? It's the removal of Dirt from our mind. dirt is in the form of Shadripu (Kaam, Krodh, lobh, moha, mada, & matsa) viz Desire, Anger,Greed, Attachment, Ego, and Jealousy, Geeta ji helps cleaning our mind from these and thus contribute to Doshapanayan.

Our body is like a Vehicle, Asserted Sanjay ji, he said our buddhi is the steering, body is the accelerator & Mind is the braking system. Failure of the Braking system can lead to fatal accidents, Our mind works like the braking System. Geeta Ji enables to know how our own mind's braking system works.

Taking another example, of Arjuna seeing Brilliant flames, from Jagadguru's mouth, Arjuna further sees, Drona, Bhishma, Karna, Duryodhana, like kites, attached to the flames, reduced to ash. Lord Krishna further says, all these warriors, have been slandered; just aim and shoot the arrows and be part of the victory.

Further, Giving insights on the 11th chapter of Geeta, Respected Sanjay ji advised all to become nirvair, ask your self

1. Can I be a good listener, listen with calmness?
2. Can I keep a hands distance from anger?
3. Can I change my Reactive Behaviour?
4. Can I discard discrimination ( manah bhed)?

Then Sanjay ji addressed an Important aspect of How to keep sadness (dukh) away? He said, Geeta teaches us to keep the sadness at bay and to always have a pleasant mind that brings a smile throughout. He also said Geeta ji teaches us how to retrace one's

steps from the three doors of Kama, Krodh and moha? How to bring about equilibrium in one's state of mind, attitude, and behaviour?

He further said Geeta is definitely our Dharma Shastra but learning Geeta makes us realize that till date how we are misguided by the definitions of Dharma. Dharma in Geetaji is defined by the Supreme as one's duty...towards self, family, society, Nation... He also emphasised the fact that Geeta is Just not a religious book but it is a Spiritual guide to enhance our life.

He humbly requested the e sadhaks not to miss even a single class of any chapter. Geeta takes the seeker nearer to himself by enriching his mind and attitude. He concluded by congratulating and blessing the sadhaks for their journey forward in Learngeeta.





# अगस्त स्तर–3 (L-3) – 9वाँ बैच

https://youtu.be/-5pwnAVj-zc

Aug22 L3 Opening Ceremony indeed had special blessings; for it was hosted live from the banks of the Holy River Ganga at Rishikesh. What an auspicious beginning it was!! The crystal clear flow of the river, the sacred sentiments for Ganga maa, the legacy of many a great saints, Rishis, Gurus attaining enlightment in the holy land and the presence of our most revered Swami Govind Dev Giriji Maharaj made the occasion more divine.

Respected Shriniwas ji Warnekar a dear student of our Param Pujya Swamiji, well versed in Geeta and Dnyaneshwari, one of Geeta Pariwar's Core members, set the tone for the proceedings of the ceremony. He shared his journey of 36 years long association with Swamiji from the inception of Geeta Pariwar at Sangamner. He virtually picturised, for us, as to how it gathered momentum by establishing centers at various places and how the pandemic gave opportunity to add a new segment, LEARNGEETA ONLINE, which made Geeta Pariwar go Global. He concluded by welcoming the participants and emphasizing that Geeta Pariwar will continue to grow and move ahead on the Motto of "GHAR GHAR GEETA, HAR KAR GEETA"

Dr. Ashu ji Goyal, welcomed the participants and said we are all very lucky to be a part of this wonderful programme which was special, as it is being telecasted from the banks of Ganga mata, which will positively impact everyone.

He shared how in 2020, Swamiji maharaj motivated them to turn the invasion of Corona all across the Globe into an opportunity to reach out far and wide via technology which these days was used for all wrong reasons most of the times. Swamiji encouraged them to make use of the technology positively to make the Vision of Ghar Ghar Geeta into a reality through the digital platform.

He explained how the divine had greater plans for his beloved swamiji's team of Geeta Parivar for when they were ready to go online in a moderate way with a figure of upto 500 participants in mind, but had a challenging surprise when they got a response from 2000+ participants in less than 24 hours. The team had to stop accepting forms to face the giant wave of sickers from the length and breadth of not chest the nation but beyond.

Geeta Pariwar and its team rose to the occasion. It was like becoming an adult overnight to shoulder the gigantic task now that the floodgates had opened for mass

registration. Suvarna Kaki ji, enthusiastically, began training Gitasevis to teach the participants, simplest ways to learn Geeta. Also framing techniques to teach the participants who never learned or couldn't even read Sanskrit. Contents were printed, books distributed, audios were recorded, videos, pictures, widgets etc. all these wonderful preparations were done in very quick succession and our happiness knew no bounds as the first batch of 2000 in the first month became 4500; then it went on 5000, 7000, 11k, 13k , 15, 25, 30k, as on 22nd August new students.

He warmly welcomed the 8000 sadhaks who progressed to L3, and would be learning next 6 chapters. The participants were not just from India but from about 130 countries connected with Geeta pariwar for enriching their spiritual journey.

He gave an insight into the day to day functioning of Geeta Pariwar. He said, it is difficult to introspect how Geeta pariwar's activity increases manifold every day. He mentioned currently the classes are conducted in 12 Languages; Hindi, English, Marathi, Telugu, Tamil, Gujarati, Malayalam, Kannada, Bengali, Oriya, Assamese and Nepali right from 5am till 10 pm, & for international time zone it goes on till 12 am, 2 am.

This amazing rich legacy is being carried on by Geeta Pariwar with the blessings and guidance from Param Pujya Swamiji who graced the ceremony to bless the participants.

Swamiji began his address by restating how blessed he feels at the fortune to share his sentiments from the banks of the sacred river Ganga. He remembered and thanked all those giants who laid the foundation for this spiritual journey decades ago and today their efforts are paying rich dividends in the manifold growth of Geeta Pariwar. He referred to Ashuji's request of blessing the participants and said he in fact is happy to congratulate them on their progress to L3.

By touching on the detailed talk of Geeta Pariwar's day to day functioning by Ashuji; he added, all the activities & work done till now was for the purpose of creating awareness and reaching out to people. After the manifestation of the Programme, such a response of people connecting in large numbers from across the globe was never planned or imagined till then.

He gave a beautiful analogy here; **Geeta Pariwars's condition was no different from Arjun's on seeing the Cosmic form of the Divine (Vishwaroop).** Having said that, the program going on since day one without any hiccups is nothing short of a miracle in layman's language. He said, this indeed is the Divine intervention of the Supreme who steered the reins of Geeta Pariwar and showered HIS grace which is but the Cosmic form. He further added, this was beyond comprehension of any being for; a gigantic

task of going global in such a short span of time, in multiple languages, multiple time slots is not a mean task but had to be HIS grace along with Sant Krupa, that is being witnessed by Geeta Pariwar.

He said all this work is done by the people who were never known nor was there a possibility to be known but Geeta mata connected us. In reality Bhagvadgeeta is the connecting FORCE of Sampoorna Bharat.

He said, Geeta's Sanskrit-Centric Chanting is done in each state of our nation; but what is being done here is not only within the country but across the world, for the well being and progress of Mankind. Geeta is a divine powerful wave where every religion, mahapurush, any caste, creed, religion, ashram, country, young old, rich, poor, educated, illiterate, small, old, backward, Materialistic, or Sanyasi, is respected. He added further, to improve mankind, the power, potent, the strength, the valour, is found and taken from Geeta.

He further said, The Divine is indeed benevolent in giving us the invaluable treasure in the form of the sacred Geeta making Arjuna a facilitator to enrich our lives by imbibing Geeta in our lives. The Divine's benevolence did not end here; he infact gave an assurance of one becoming his fondest devotee by learning Geeta and added, chanting the shlokas daily is in reality performing gyana yagya and would derive benefits in the form of good deeds.

He further said, one who set on to the path of acquiring the Knowledge from Geeta, and also becoming a messenger and instrumental in community building by reaching out to one and all is the most favourite devotee of HIS, The Divine's love for him would remain unparalleled forever. What more does one desire? Our duty is to become HIS loved one and doing so everything is achieved and there remains nothing to yearn for anymore.

Swamiji further added how the desire to become Bhagavan's loved one has increased the fortunes of Geeta Parivar through the steadfast belief of the Karyakartas in The Divine's spoken words....The Geeta.

In reality it is the Lord's compassion. In accordance with this; Dnyaneshwar maharaj ji said, when one introduces Geeta to someone or teaches Geeta, it is similar to a lost child in fair who is crying and is desperately searching for but unable to find and both the mother and child are in despair. Suddenly a good hearted person who reunites the child and mother, the joy that the kid and the mother experiences is incomparable and likens to the Geeta mata that is wanting to reach out to her children who are crying, wailing, drowned in sorrow, bounded by attachment, as was Arjuna's condition and unaware of the way to come out of it.

All those karyakartas, Who introduce Geeta to such people in despair through any medium, attain good deed as much of returning lost child to the mother. While on this path, various people help in different ways like few become core trainers, few are in technical assistance, few do arrangements, few donate money,Different types of tasks are carried out by different people but all attain the same fruits, as that of the Geeta Pracharak.

He shared what Dnyaneshwar maharaj ji said that in big houses, while preparing food, their is often discrimination in preparing food for VIP, VVIP, subordinates etc. Geeta mata, however, searves equally to technicians, callers, etc. and everyone gets the same fruits as much as the Geeta educators do.

He said that it amazes him and makes him ponder to see how this Anushthan (commencement activities proceedings celebratios) is functioning so smoothly.

He said, He said this divine auspicious and invaluable activity is now in reach to all of us. We all are indeed blessed to be a part of this prosperous journey.

He restated the importance of Reading Geeta & getting it into our lives. He also emphasised the need to make more and more people read Geeta and make it a part of their life.

He concluded his talk with a Prayer to Ganga mata asking her; O' mother, you are full of compassion, please give us strength & intellect to continue on this path, to read, make others read, and to make Geeta a part of our lives as we know & believe this is the key to a successful life.





# अगस्त स्तर–4 (L-4) – 4वाँ बैच

https://youtu.be/YIRhacwD2m4

Dr. Ashu Goyal Bhaiya, the National Vice President, Geeta Pariwar, Welcomed the 8000 sadhaks to May L4 batch and appreciated their progress to the final level of learning Geeta.

He mentioned that, including the first L4 batch of May, the number of sadhaks reaching the final level turned out to be 25,000 till date. He said we are blessed that we are an integral part of such a glorious event . All this is the result of our good deeds not just in the past but the present too and also the blessings of our ancestors.

He applauded the progress made by all the sadhaks but also made an earnest request never to drift away from the path shown and laid by Geeta ji. He said it's quite natural to have a query or a thought in their minds that once the L4 learning is over then what? He then laid down the options of staying connected to Geeta through the Geeta Pariwar's motto; Learn Geeta, Teach Geeta and imbibe Geeta.

He said, now that the first step of learn Geeta gets completed, they need to move to the next step : Teach Geeta. Here, he elaborated on the “teach Geeta” aspect. He said “teach” encompasses many dimensions of offering services other than becoming a Core trainer.

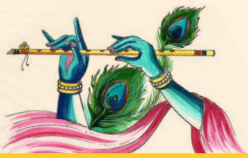
There are 36 different departments from which one can choose to offer their services which culminate into teaching and reaching many more sadhaks in their quest to learn Geeta. Becoming a part of the Volunteer brigade results into making Geeta their way of life thus achieving the final aspect of the motto “imbibe Geeta”.

He said, one should, without fail, attend the weekend Vivechans for; these inspire to pick up some good thoughts and morals to enrich themselves by incorporating the good actions, attitude and become a better version of self, each day.

He further added that, mere completion of level 4 does not mean one has mastered Geeta, and that, one needs to learn Geeta throughout the life to know it better, as Swamiji says Geeta is a marvel that has such a depth that one keeps on learning something new each day from it.

Respected Ashu Ji also suggested all; to rejoin the class from whichever level they desire and keep learning to gain perfection and be totally attached to Geeta.

He concluded by saying that, it's time to let go the traits like aggression, ego, jealousy, negativity and adopting good thoughts, good actions, positive outlook, caring for others, living for others alongside their own growth, taking care and nurturing the nature. These actions would take us closer to our goal of attaining divinity. He said all this can happen only if one relentlessly puts in efforts to bring about a desired change. He also asked the sadhaks to become the torch bearers to spread Geeta far and wide. And doing so one becomes dearer to the Divine.



# गीता चिन्तनिका सत्र

## अध्याय 4, 5, 6 – 10 जुलाई 2022

### गीता चिंतनिका 10 जुलाई 2022 (देवशयनी एकादशी)

https://youtu.be/fHK4lRXlQIY

| | | |
|---|---|---|
| अध्याय 4 पठन | : | गीताव्रती प्रिया अग्रवाल जी |
| अध्याय 4 चिंतन | : | गीताव्रती जयश्री ज़िंज़ारे जी |
| अध्याय 5 पठन | : | गीताव्रती सदिच्छा सालुंके जी |
| अध्याय 5 चिंतन | : | गीताव्रती अपर्णा होलकुंडकर जी |
| अध्याय 6 पठन | : | गीताव्रती नंदा पांडिलवार जी |
| अध्याय 6 चिंतन | : | गीताव्रती रत्ना मोरे जी |
| सूत्र संचालन | : | श्रीमती ममता गौतम जी |
| आरम्भिक प्रार्थना | : | गीताव्रती हंसिका काबरा जी |
| दीप प्रज्ज्वलन | : | श्रीमती विजया मालपाणी जी |
| समापन प्रार्थना | : | गीताव्रती नींव बल्दवा जी |
| आभार ज्ञापन | : | गीताव्रती अर्चना इंदाणी जी |



## अध्याय 4 - ज्ञानकर्मसंन्यासयोग

भगवान के दिव्यअवतारों एवं उनके जन्म के रहस्य से अध्याय आरम्भ होता है। आगे भगवान अनन्त युगों की कालावधि में संसार से लुप्त हो चुके प्राचीन गूढ़ योग विज्ञान को प्रकट करते हुये कर्म की प्रकृति पर प्रकाश डालते हैं। श्लोक संख्या 6 से 8 तक भगवान अपनी दिव्य शक्ति योगमाया द्वारा संसार में उनके दिव्यावतारों का प्रयोजन बताते हुये, उनके जन्म की दिव्यता को तत्त्व से समझ लेने को ही पुनर्जन्म से छूटने का उपाय बताते हैं।

यथा भाव तथा गति, सकाम कर्मों की सफलता, मनुष्यों के गुणों और कर्मों के अनुसार मेरे द्वारा चार वर्णों की रचना के उपरांत "गहना कर्मणो गतिः" कहते हुये कर्मों के तीन प्रकार कर्म-विकर्म-अकर्म

(अनुमोदित कर्म, वर्जित कर्म और अकर्म) से सम्बंधित सिद्धान्त बतलाते हैं।

श्लोक संख्या 18 से 24 तक सांसारिक मोह से मुक्त, पूर्णतया भगवद्चेतना में तल्लीन, फल की आकांक्षाओं और स्वामित्व की भावना से मुक्त ज्ञानीजन किस प्रकार कर्म करते हैं, यह बताते हुये भगवान ऐसे संतो के प्रत्येक कार्य को यज्ञ एवं प्रत्येक वस्तु को ब्रम्ह का स्वरूप बताते हैं।

श्लोक संख्या 24 से 33 तक विभिन्न यज्ञों का वर्णन करते हुये द्रव्यमय यज्ञ से ज्ञानयज्ञ को श्रेष्ठ बताते हैं। ज्ञान के महत्त्व को बताते हुये आगे भगवान कहते हैं कि बड़े से बड़ा पापी भी इस ज्ञान रूपी नौका से संसार सागर को पार कर सकता है। इस संसार में दिव्यज्ञान के समान कुछ भी शुद्ध नहीं है, ज्ञान रूपी अग्नि भौतिक कर्मों से प्राप्त होने वाले समस्त फलों को भस्म कर देती है।

श्रद्धावान पुरुष ही उस परम ज्ञान को प्राप्त कर सकता है अतः तुम्हारे हृदय में अज्ञानतावश जो संदेह उत्पन्न हुये हैं उन्हें ज्ञानरूपी शस्त्र से काट कर, हे भरतवंशी अर्जुन! स्वयं को योग में निष्ठ करो। उठो, खड़े हो, आगे बढ़ो। ऐसा कहकर आगे के अध्याय में बढ़ जाते हैं।

## अध्याय 5 - कर्मसंन्यासयोग

इस अध्याय के आरम्भ में कर्मसंन्यास एवं कर्म योग दोनों मार्गों में श्रेष्ठ मार्ग पूछे जाने पर भगवान कर्म योग को उत्तम बताते हुये कहते हैं कि कर्मयोगी जो न तो कोई कामना करते हैं और न ही किसी से घृणा करते हैं उन्हें नित्य संन्यासी ही समझना चाहिये। तत्त्वत: कर्मसंन्यास (सांख्य योग) एवं कर्म योग दोनों ही मार्गों का गंतव्य एक ही है। कर्मयोग के बिना संन्यास सिद्ध होना कठिन है। अतः मननशील कर्मयोगी शीघ्र ही ब्रह्म को प्राप्त हो जातें हैं।

विशुद्ध बुद्धि युक्त कर्मयोगी 'मैं कर्ता नहीं हूँ' ऐसा भाव रख कर प्रत्येक कर्म आसक्ति रहित होकर करते हैं तथा पापकर्म से वह उसी प्रकार से निर्लिप्त रहते हैं जिस प्रकार से कमल के पत्ते को जल स्पर्श नहीं कर पाता। कर्मयोगी इन्द्रिय-शरीर-मन-बुद्धि के द्वारा केवल अन्तःकरण की शुद्धि के लिये ही कर्म करते हैं।

सर्वव्यापी परमात्मा से न तो कर्तापन का बोध और न ही कर्मों की प्रवृत्ति प्राप्त होती है, न वह किसी के पापमय या पुण्य कर्मों में स्वयं को लिप्त करते हैं, यह सब प्रकृत्ति के त्रिगुणीमयी शक्ति से सृजित होते






हैं। इसप्रकार कर्मयोग के अतिसूक्ष्म रहस्यों का प्रतिपादन करते हुये भगवान सच्चे आत्मज्ञानी महापुरुष के लक्षण एवं उनके व्यवहार के बारे में श्लोक संख्या 16 से 27 तक विस्तारपूर्वक बताते हुये प्राणायाम द्वारा इन्द्रिय, मन और बुद्धि को संयमित करने की प्रक्रिया का वर्णन करते हुये अध्याय का समापन करते हैं।

## अध्याय 6 - आत्मसंयमयोग

अध्याय 5 पर जारी चर्चा को आगे बढ़ाते हुये भगवान पुनः अर्जुन को कर्मसंन्यास एवं कर्म योग में पुनः कर्म योग का अधिक महत्व बताकर कहते है की कोई भी सांसारिक कामनाओं का त्याग किए बिना संन्यासी नहीं बन सकता यद्यपि वह संसार के सम्मुख योगी का आवरण धारण कर सांसारिक कर्मों से विरक्ति ही क्यों न ले लें। वे मनुष्य जो कर्मफल की कामना से रहित होकर अपने नियत कर्मों का पालन करते हैं वे वास्तव में संन्यासी और योगी होते हैं।

भगवान आगे तीन प्रकार के साधकों ( जिज्ञासु योगी, सतत मननशील मुनि एवं योगरूढ़ सिद्ध योगी ) का वर्णन करते हुये कर्मयोग की साधना हेतु मार्ग बताते हैं। भली भांति आत्मनियंत्रित मन ही हमारा सबसे बड़ा मित्र एवं वही हमारा सबसे बड़ा शत्रु है। सभी साधनाओं का द्वार मन के नियंत्रण से ही खुलता है। श्लोक संख्या 10 से 20 तक योग के मार्ग में आगे बढ़ने वाले साधकों हेतु साधना की पद्धति का उल्लेख करते हुये कहते हैं कि मन को भौतिक जगत से हटाकर योगाभ्यास के द्वारा स्थिर करने के उपरांत योगी ऐसे शुद्ध मन द्वारा आत्म-तत्त्व को देख सकता है। और आंतरिक आनन्द में मगन हो सकता है। इस तरह से सदा परमात्मा में लगाता हुआ मुझमें सम्यक् स्थितिवाला स्थिर शुद्ध मन परमशान्ति को प्राप्त हो जाता है। योग में चरम आनन्द की यह अवस्था समाधि कहलाती है, इसे पाने के बाद कुछ भी श्रेष्ठ पाने की इच्छा नहीं रहती तथा इसमें स्थित मनुष्य परम सत्य के पथ से कभी विपथ नहीं होता।

योग साधना द्वारा प्राप्त समाधि अवस्था का वर्णन करते हुये, मन पर अंकुश लगाने के उपाय बताते हुये आगे श्लोक संख्या 20 से 32 तक भगवान ऐसे सिद्ध पुरुषों के लक्षणों का वर्णन करते हुये बताते हैं कि निश्चयात्मक बुद्धि द्वारा सदा परमात्म चिंतन में लगा हुआ पापरहित योगी सुखपूर्वक ब्रह्मप्राप्ति रुपी अत्यन्त सुख को प्राप्त हो जाता है तथा उसे सर्वत्र ईश्वर ही ईश्वर के दर्शन होते हैं।

मन की साधना के रहस्य को कठिन जानकर अर्जुन कौतूहलपूर्वक भगवान से बोल पड़ते हैं कि अत्यंत






ही चञ्चल, प्रमथनशील, दृढ़ (जिद्दी) और बलवान् मन का निग्रह करना मैं वायु की तरह अत्यन्त कठिन मानता हूँ। जिस पर भगवान सतत अभ्यास एवं वैराग्य के योग द्वारा मन पर भी विजय प्राप्त करने का मंत्र देते हैं।

अध्याय के अंतिम 10 श्लोकों (श्लोक संख्या 37 से 47 तक) में भगवान योग मार्ग से भ्रष्ट साधकों के बारे में अर्जुन को बताते हुये कहते हैं कि हे पार्थ ! शुभ कर्म करने वाले पुरुष का, न तो इस लोक में और न ही परलोक में ही नाश होता है। सकामभाव वाले तपस्वियों, ज्ञानियों से और कर्मियों से भी निष्काम भाव वाला सदा मुझमें ही स्थिर बुद्धिवाला योगी श्रेष्ठ है। अतः जो सदैव मुझ में तल्लीन और अगाध श्रद्धा से मेरी भक्ति में निमग्न रहते हैं उन्हें ही मैं सर्वश्रेष्ठ मानता हूँ। ऐसा कहकर भगवान अर्जुन को भी योगी बनने को कहते हैं।

## अध्याय 3 – कर्मयोग

अध्याय के नामानुरुप ही इस अध्याय में कर्म की आवश्यकता, कर्म की प्रकृति एवं प्रकार (कर्तव्यकर्म, निष्कामयज्ञ कर्म, पाप कर्म) इत्यादि पर योगेश्वर भगवान कृष्ण ने प्रकाश डाला है। कर्म के प्रकृति एवं प्रवृत्ति के अनुरुप ही संसार में तीन प्रकार के मनुष्यों का दर्शन इस अध्याय में होता है;

**आत्मलीन तत्त्वज्ञानी महापुरुषों :** जो प्रबुद्ध और पूर्णतया आत्म संतुष्ट होते हैं, उनके लिए कोई नियत कर्तव्य नहीं होता।

**ईश्वर भक्त साधक :** आध्यात्मिक मनोवृत्ति वाले बुद्धिमान मनुष्य जिन्हें नियमित अनासक्त कर्तव्य कर्म करने हेतु उपदेश दिया गया है।

**अज्ञानी जीवात्मा :** जो लोग फल की आसक्ति की कामना से कर्म करते हैं एवं कर्मबंधनो में फंसते हैं।

कर्म के महत्त्व पर बल देते हुये भगवान बताते हैं कि श्रेष्ठ मनुष्यों को सदा ही लोककल्याण एवं प्रेरणा हेतु राजा जनक एवं स्वयं श्री कृष्ण की भांति कर्म योग करते रहना चाहिये अन्यथा समाज में अव्यवस्था फ़ैल जायेगी। जीवात्मा स्वयं को कर्ता समझता है, यद्यपि सम्पूर्ण कार्य प्रकृति के तीन गुणों से प्रेरित होते हैं। अतृप्त कामना रूपी ही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। आत्मा को लौकिक बुद्धि से श्रेष्ठ जानकर अपनी इन्द्रिय, मन और बुद्धि पर संयमन करके आत्मज्ञान द्वारा कामरूपी दुर्जेय शत्रु पर विजय पाने के उत्तम ज्ञान के साथ अध्याय समाप्त होता है।

## अध्याय 7, 8, 9 – 24 जुलाई 2022

### गीता चिंतनिका 24 जुलाई 2022 (कामिका एकादशी)

https://youtu.be/B6_tZsXz4nQ

| | | |
|---|---|---|
| अध्याय 7 पठन | : | गीताव्रती पार्वती कड जी |
| अध्याय 7 चिंतन | : | गीताव्रती अश्विनी जोशी जी |
| अध्याय 8 पठन | : | गीताव्रती वर्षा पोलावर जी |
| अध्याय 8 चिंतन | : | गीताव्रती दीप्ती म्हापसेकर जी |
| अध्याय 9 पठन | : | गीताव्रती हेमा लड्ढा जी |
| अध्याय 9 चिंतन | : | गीताव्रती श्रवणी नाइक जी |
| सूत्र संचालन | : | श्रीमती मृदुला असावा जी |
| आरम्भिक प्रार्थना | : | गीताव्रती सिद्धि मोडक जी |
| दीप प्रज्ज्वलन | : | गीताव्रती चेतना नारायण जी |
| समापन प्रार्थना | : | गीताव्रती प्रिशा लारा जी |
| आभार ज्ञापन | : | गीताव्रती डॉ. तृप्ति केनी जी |



### अध्याय 7 - ज्ञानविज्ञानयोग

आत्मसाधना एवं समाधि का सारा रहस्य खोलकर भगवान अर्जुन को स्वयं को पूर्ण रूपेण ज्ञान एवं विज्ञान सहित जान लेने हेतु उपदेश देते हैं, जिस ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् अन्य कुछ भी प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता। हजारो मनुष्यों में से कोई बिरला ही सिद्धि को प्राप्त करता है एवं उन सिद्ध पुरुषों में भी कोई विशेष योगी ही ईश्वर को प्राप्त कर पाता है।

तत्पश्चात् श्लोक संख्या 4 से 11 तक भगवान संसार की रचना के सम्बन्ध में बताते हुये कहते हैं कि परमात्मा ही सबके कारण हैं एवं अपनी जड़ (अपरा प्रकृति = निकृष्ट, जड और परिवर्तनशील) एवं चेतन (परा प्रकृति= श्रेष्ठ, चेतन और अपरिवर्तनशील) प्रकृति के साथ मिलकर सृष्टि की रचना करते

हैं। अर्जुन को जड़ और चेतन का भेद स्पष्ट करने के लिये भगवान् श्रीकृष्ण प्रथम प्रकृति के आठ भागों (अष्टधा प्रकृति = आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी पंचमहाभूत तथा मन, बुद्धि और अहंकार) को बताते हैं। साथ ही विभिन्न सांसारिक रचनाओं का अवलम्बन लेकर इन परा एवं अपरा में भेद को समझाते हैं।

श्लोक संख्या 12 से 14 तक भगवान अपनी त्रिगुणात्मक दैवीय योगमाया शक्ति का वर्णन करते हैं जिससे मोहित होकर सारा संसार ईश्वर के नित्य और अविनाशी स्वरुप को जान पाने में असमर्थ रहता है। केवल वही जो भगवान की सच्ची शरणागति ग्रहण करते हैं इनसे तर पाते हैं।

श्लोक संख्या 15 एवं 16 में क्रमश: चार-चार प्रकार के लोगों का वर्गीकरण किया गया है - 1) जो ईश्वर भक्ति से विमुख रह जाते हैं, 2) जो ईश्वर की भक्ति करते हैं। श्लोक संख्या 17 से 19 तक अनन्य भाव से ईश्वर भक्ति में तल्लीन महापुरुषों के लक्षण बताये हैं। इसके विपरीत ईश्वर में अश्रद्धा रखने वालों के सम्बन्ध में (श्लोक संख्या 19 से 25 तक) बताते हुये कहते हैं कि मैं सभी के लिये प्रकट नहीं हूँ क्योंकि सब मेरी अंतरंग शक्ति 'योगमाया' द्वारा आच्छादित रहते हैं।

अंतिम के 5 श्लोकों में भगवान सार प्रकट करते हुये कहते हैं कि भगवान सर्वज्ञ हैं तथा वह सभी प्राणियों का भूत, वर्तमान और भविष्य जानते हैं। जिन व्यक्तियों के पाप नष्ट हो गये हैं, जो मोह के द्वन्द्वों से मुक्त हो गये हैं, ऐसे लोग दृढ़ संकल्प के साथ मेरी पूजा करते हैं और अंतकाल में अधिभूत, अधिदैव और अधियज्ञ के सहित मुझे ही प्राप्त होते हैं।

## अध्याय 8 - अक्षरब्रह्मयोग

आध्यात्मिक यात्रा का अत्यंत ही महत्वपूर्ण पड़ाव है अध्याय 8 एवं इसके विषय, क्योंकि सभी अध्यायों में लगभग जीवन को उत्तम रीती से व्यतीत करने की ही चर्चा हुयी है किन्तु यहां पर भगवान मृत्यु की बात करते हैं एवं जीवन मरण से जुड़े कुछ बहुत ही गूढ़ ताने-बाने का अनावरण करते हैं। जिनका उपनिषदों में विस्तार से उल्लेख किया गया है। आठवें अध्याय की पृष्ठ भूमि भी अन्य अध्यायों की तरह ही पूर्व के अध्यायों के अंतिम श्लोकों से आरम्भ होती है जिसमें भगवान ने कुछ शब्दों का उल्लेख किया है जिसके संबंध में ही अर्जुन के प्रश्नो के उत्तर देते हुये 'ब्रह्म', 'अध्यात्म', 'अधिभूत', 'अधिदैव' इत्यादि अध्यात्म सम्बन्धित शब्दों की व्याख्या करते है।

श्लोक संख्या 5 से 10 तक भगवान अंतिम समय में शरीर त्यागने के क्षण पर स्मरण का महत्त्व बताते हुये कहते हैं कि अभ्यासयोग से युक्त और अन्यका चिन्तन न करने वाले चित्त से परम दिव्य पुरुष का चिन्तन करता हुआ (शरीर छोड़नेवाला मनुष्य) उसी को प्राप्त हो जाता है।

आगे के श्लोकों में भगवान काल गणना के सम्बन्ध में विस्तार पूर्वक बताते हैं। साथ ही अपने परमधाम को प्राप्त करने के साधनों का भी वर्णन करते हैं जिसे प्राप्त करने के बाद पुनर्जन्म नहीं होता।

अंत में श्रीकृष्ण कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष, उत्तरायण एवं दक्षिणायन के सम्बन्ध में बताते हुये कहते हैं कि इन दोनों मार्गों को जानने वाला कोई भी योगी मोहित नहीं होता और ऐसा योगी सभी प्रकार के वर्णित पुण्यफलों का भी अतिक्रमण करके आदिस्थान परमात्मा को प्राप्त हो जाता है। अतः हे अर्जुन ! तुम भी ऐसे ही योगी बनो।

## अध्याय 9 – राजविद्याराजगुह्ययोग

"गुह्यतमं" शब्द भगवान ने 3 जगह प्रयोग किया है जिसमें 9 अध्याय में प्रथम बार प्रयुक्त करते हुये समूचे ब्रह्माण्ड की रचना एवं दिव्य ईश्वरीय शक्तियों के रहस्य का प्रतिपादन करते हुये कहते हैं - यह सम्पूर्ण जगत् मुझ (परमात्मा) के अव्यक्त स्वरूप से व्याप्त है; संसार के प्रत्येक भूतमात्र मुझमें स्थित है, परन्तु मैं उनमें स्थित नहीं हूं। दैवी प्रकृति के आश्रित अनन्यमन वाले महात्मा लोग ही मुझे सम्पूर्ण प्राणियों का जनक और सर्वव्यापक अविनाशी समझकर मेरा भजन करते हैं। प्रभु श्लोक 16 से 19 तक अपनी सर्वव्यापकता एवं उसमें निहित अपनी शक्ति का वर्णन करते हैं।

श्लोक संख्या 20 से 25 तक अनेक प्रकार के सकाम यज्ञ कर्मों का वर्णन करते हुये भगवान बताते हैं कि सकाम कर्मों का फल क्षणिक होता है एवं इनके पुण्य भोगने के पश्चात् मनुष्य पुनः पृथ्वीलोक में जन्म लेता है तथा यह यात्रा लगातार ऐसे ही चलती रहती है। इसके विपरीत मेरी अनन्य भक्ति भाव से ईश्वर में लीन रहने वाले निष्काम भक्तों के योग एवं क्षेम का वहन मैं स्वयं करता हूँ।

श्लोक संख्या 26 से 34 अर्थात् अध्याय के अंत तक भगवान भक्ति योग के महत्त्वपूर्ण सूत्रों का उद्घाटन करते हुये कहते हैं कि किसी पदार्थ अथवा वेदोक्त कर्मकांड से भी अधिक प्रिय भक्त के हृदय के शुद्धभाव हैं। ऐसे अनन्य श्रद्धा एवं भक्तिभाव से अर्पित किये गये पत्र, पुष्प, फल या जल भी वह सहर्ष स्वीकार करते हैं। अंततः भगवान अपनी सम दृष्टि का परिचय देते हुये बताते हैं कि अनन्य भाव वाला दुष्ट प्रवृत्ति का अधम मनुष्य भी साधु के समान ही ईश्वर के परमपद परमधाम को प्राप्त कर सकता है। अत्यंत महत्त्वपूर्ण घोषणा के साथ भगवान अध्याय का अंत करते हैं और कहते हैं - हे अर्जुन ! तू सदैव मेरा चिन्तन कर, मेरा भक्त बन, मेरी पूजा कर। इस प्रकार से अपने मन और शरीर को मुझे समर्पित करने से तुम निश्चित रूप से मुझको प्राप्त करोगे।

इसी प्रकार चिन्तनिका के अन्य सत्र भी संपन्न हुये -

## गीता चिन्तनिका सत्र –

अध्याय 10, 11, 12 – 8 अगस्त 2022
https://youtu.be/Qx5o7_TxDeY

अध्याय 13, 14, 15 – 23 अगस्त 2022
https://youtu.be/4Mm2mFQn6K4

# भगवद्गीता व्याकरण कक्षायें (Geeta Grammar Session)

## Level 1 – Geeta Grammar Class - Hindi & English

**Hindi :** https://youtu.be/K6XBg1xFf24
**English :** https://youtu.be/XeP_UMh7ngo



दिनांक 29 जुलाई 2022 को रात्रि 8:30 से 10:00 बजे तक L-1 स्तर के ऐसे साधक जिन्होंने एक अध्याय 12 को गीता परिवार द्वारा प्रमाणित शिक्षकों से पढ़ना सीखा है उनके लिये अंग्रेजी तथा हिंदी माध्यम में अलग-अलग संस्कृत व्याकरण कक्षा एवं शंका निवारण सत्र का आयोजन किया गया। अंग्रेजी भाषा में गीताव्रती एवं गीता प्रवीण कविता वर्मा दीदी तथा हिंदी भाषा में गीता व्रती एवं गीता प्रवीण रूपल शुक्ला दीदी ने कक्षाएं ली। गीता परिवार के गीत "ईश्वर भक्ति भाव से बहती संस्कारों की धारा, भारत माँ की सेवा में गीता परिवार हमारा" से कक्षा प्रारंभ हुई।

संस्कृत भाषा को संसार की प्रथम भाषा माना जाता है। किसी समय संस्कृत भाषा का प्रयोग क्षेत्र अत्यंत विस्तृत था । यदि संसार की समस्त भाषाओं के नवीन और प्राचीन स्वरूपों की तुलना की जाये तो स्पष्ट ज्ञात होगा कि संसार की सब भाषाओं का आदि मूल संस्कृत भाषा ही है। गीता जी को संस्कृत में शुद्ध उच्चारण से पढ़ने के लिये व्यक्ति को संस्कृत भाषा के सामान्य व्याकरण की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। गीता जी को संस्कृत में और वह भी शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने में जो आनंद और ऊर्जा का अनुभव होता है, वह लंबे समय तक और स्थिर रूप से हमारे अंदर रहता है । हमारी आत्मा प्रसन्नता की पराकाष्ठा का अनुभव करती है ।

व्याकरण का दूसरा नाम शब्दानुशासन है जिससे हम शब्दों को अनुस्वार, आघात, विसर्ग आदि के नियमानुसार पढ़ पाएं। हालांकि व्याकरण बहुत विस्तृत है गीता जी पढ़ने के लिये हमें इतना गहन अध्ययन नहीं करना है। यहाँ उतना ही सिखाया जाता है कि हम गीता जी शुद्ध उच्चारण से पढ़ सकें, जो कृष्ण भगवान ने शब्द कहे हैं, वह अपने मुख से भी निकल सकें।

संस्कृत व्याकरण के नियम गणित के नियमों की तरह ही सूक्ष्म एवं वैज्ञानिक हैं। गणित का जितना अभ्यास किया जाये उतनी ही प्रवीणता आती है, उसी प्रकार गीता जी का भी जितना अधिक बोल बोलकर अभ्यास किया जाये उतना ही उच्चारण शुद्ध होता जाता है। आदरणीय सुवर्णा काकी जी के ऑडियो को गंभीरता से सुनें और स्वयं अभ्यास करते जाएं।

वेद स्वयं कहते हैं -

**देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।**

अर्थात् देव जिस दिव्य वाणी को प्रकट करते हैं, साधारण जन उसी को बोलते हैं।

इस प्रकार गीता व्याकरण कक्षाओं का नियमित रुप से समय-समय पर आयोजन किया जाता है ताकि गीता साधक व्याकरण समझकर शुद्ध उच्चारण सीख सकें।

## Level 2 – Geeta Grammar Class – Hindi & English

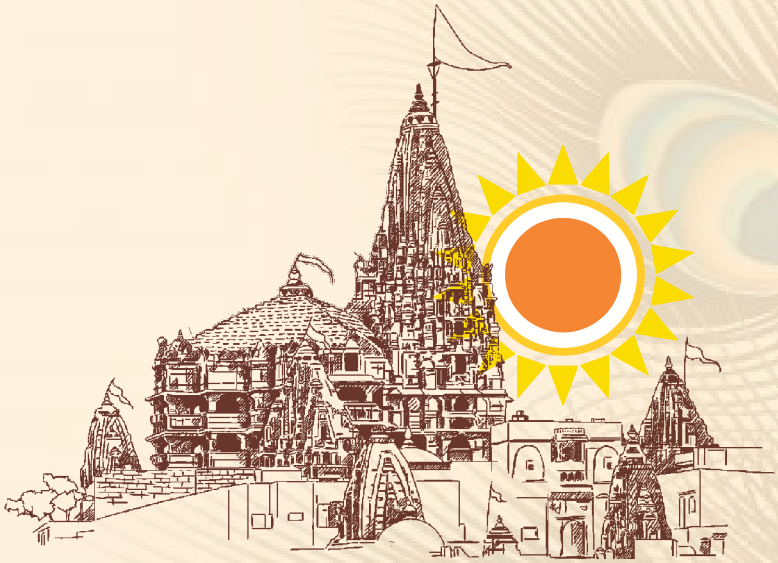
**Hindi :** https://youtu.be/lk2iVcpSdV8
**English :** https://youtu.be/ltu_8ksmerQ

दिनांक 8 जुलाई 2022 को रात्रि 8:30 बजे से L-2 स्तर के गीता साधकों के लिये अंग्रेजी तथा हिंदी माध्यम में संस्कृत व्याकरण कक्षाओं तथा शंका समाधान सत्र का आयोजन ज़ूम एप तथा यू ट्यूब पर किया गया। "ईश्वर भक्ति भाव से बहती संस्कारों की धारा, भारत मां की सेवा में गीता परिवार हमारा" इस गीत से कक्षा का श्री गणेश हुआ। उसके बाद गौमाता तथा कान्हा के बीच वार्तालाप की बहुत ही सुंदर एनिमेशन फिल्म के द्वारा लोगों को गीता जी शुद्ध उच्चारण से सीखने के लिये गीता परिवार में रजिस्ट्रेशन के लिये प्रेरित किया गया। "सद्गुणों की साधना में - ध्येय ज्योति नित्य जले" गीत हुआ। जून 2020 से अब तक 131 देशों के 4 लाख से अधिक गीता प्रेमी साधकों को गीता की कक्षाओं में प्रवेश दिया गया है। प्रातः 5:00 बजे से रात्रि 2:00 बजे तक 40 मिनट के 18 टाइम स्लॉट्स में तथा 12 भाषाओं में गीता परिवार द्वारा निःशुल्क गीता जी का सस्वर शुद्ध उच्चारण ज़ूम एप पर सिखाया जा रहा है।

गीता जी को संस्कृत में पढ़ने से कतराने वाले व्यक्ति 2 अध्याय संस्कृत में अच्छी तरह पढ़ने के बाद एवं गीता परिवार के पूज्य स्वामी गोविंद देव गिरी जी महाराज से गीता गुंजन प्रमाण पत्र पाकर जोश एवं उत्साह से भर जाते हैं। अतः आगे के अध्याय में काम आने वाली व्याकरण को समझाने के लिये L-2 स्तर के साधकों के लिये इन कक्षाओं का आयोजन किया गया।

हिंदी भाषा में संचालिका अनुजा भट्ट्ड दीदी ने संस्कृत के प्रकांड पंडित आचार्य श्री नारायण शेटे कोयंबटूर को व्याकरण कक्षा हेतु आमंत्रित किया। अंग्रेजी भाषा में एंकर आर्या इंदानी दीदी ने गीता व्रती एवं गीता प्रवीण दोनों दीदी कविता वर्मा जी एवं रूपल शुक्ला जी को व्याकरण कक्षा हेतु आमंत्रित किया। दोनों ही दीदी पूज्य स्वामी गोविंद देव गिरी जी महाराज की विशेष कृपा पात्र शिष्याएं हैं।

प्रारंभ में कविता दीदी ने बताया कि L-2 स्तर की व्याकरण कक्षा L-1 की अपेक्षा कुछ विस्तृत है एवं आगे L-3 एवं L- 4 में जाने वाले साधकों के लिये व्याकरण इससे भी कुछ विस्तृत होगी जो आपको उस समय सिखायी जायेगी। रूपल शुक्ला दीदी ने बताया कि कौन सा अक्षर मुख के कौन से भाग से निकलना चाहिये यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। कंठ, तालु, मूर्धा, दंत और ओष्ठ का सही सही उपयोग करने से ही हम शुद्ध उच्चारण कर सकते हैं। उच्चारणस्थानानि चित्र से अच्छी तरह जानकारी प्रदान की गयी। आधात और संधि के नियम भी साधकों को बताये गये। इस प्रकार से L-2 स्तर के साधकों के लिये व्याकरण कक्षाओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया एवं साधकों की शंकाओं का समाधान भी किया गया।



# गीता मैत्री मिलन

## मुम्बई

https://youtu.be/dkeq3bbVWtE

गीता परिवार का मैत्री मिलन गत 10 जुलाई 2022, रविवार को प्रातः 10.30 बजे से अपराह्न 12.30 तक रवीन्द्र नाट्य मन्दिर, प्रभा देवी, मुम्बई में सोल्लास आयोजित किया गया। आषाढ़ी एकादशी के पावन दिन जब कि चतुर्मास का प्रारम्भ होता है और भगवान विट्ठल के दर्शन हेतु पंढरपुर की यात्रा प्रारम्भ होती है, इस मैत्री मिलन का भव्य आयोजन अपने आप में दिव्य था। गीता परिवार के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ संजय मालपाणी ने मुख्य अतिथि के रूप में "वारी" के साथ गीता परिवार के कार्यकर्ताओं के साथ वारी के भजन **"ध्वजा वैष्णवाँ की...."** का गायन करते हुये करतल ध्वनि के बीच सभागार में प्रवेश किया।

गीता परिवार के अभिभावक और "**हेमा फ़ाउण्डेशन** के संस्थापक श्री महेंद्र जी काबरा ने श्री संजय जी मालपाणी के साथ दीप-प्रज्वलन किया। साथ में गीता परिवार, मुम्बई की अध्यक्षा डॉ गायत्री पाण्डवा और गीता परिवार की पश्चिम भारत की उपाध्यक्षा अंजलि तापडिया जी, पुणे भी उपस्थित थीं। श्री काबरा जी ने श्री संजय मालपाणी जी का और गायत्री जी ने अंजलि दीदी का सम्मान किया। डॉ गायत्री पाण्डवा ने अपने स्वागत - भाषण में कहा- **"सकृतं गीतामिष्टं सकलमलनाशनम्।"** अंजलि दीदी ने "गीता परिवार" के उद्देश्य और क्रिया-कलापों पर प्रकाश डालते हुये "मधुबन ख़ुशबू देता है, सागर पानी देता है" को चरितार्थ किया। उन्होंने बतलाया कि वे किस प्रकार के सेवा - प्रकल्पों में कार्यरत हैं। उन्हें उनके सेवा - कार्य के लिये कई पुरस्कार भी मिल चुके हैं।

इसके पश्चात् सभागार में उपस्थित सभी "गीताव्रती" साधकों का मंच पर बुला कर डॉ संजय मालपाणी जी द्वारा- **"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरितासउद्भिदः।**
**देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥"** - मन्त्रोच्चार के मध्य सम्मान किया गया। तत्पश्चात् आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर "गीता परिवार" द्वारा आयोजित "सूर्य नमस्कार" में भाग लेने वाले स्कूलों - यथा सेन्ट मेरी स्कूल, बिरला स्कूल, भागूभाई स्कूल आदि के प्रतिनिधियों का भी सम्मान किया गया।





कार्यक्रम की संचालिका श्रीमती नमिता मेहरा ने संजय भैया का आभार व्यक्त करते हुये उनसे साधकों के मार्गदर्शन हेतु उन्हें सम्बोधित करने का आग्रह किया।

संजय भैया ने बताया कि हमारे परम पूज्य स्वामी जी श्री गोविन्द देव गिरि जी महाराज का जीवन और आचरण कितना सादगीपूर्ण है। वे विद्वान और योगी दोनों ही हैं। उनकी प्रेरणा से "गीता-परिवार" का यह रथ कोरोना काल में **"ऑनलाइन संथा वर्ग"** के रूप में चल पड़ा और हम प्रतिदिन नये आयाम बनाते जा रहे हैं और यह परिवार एक वट-वृक्ष के रूप में निरन्तर बढ़ रहा है।

उन्होंने यह भी कहा कि पूज्य स्वामी जी की प्रेरणा से वे पहले "गीताव्रती" बने जबकि आज जैसी सुविधाएँ उस समय नहीं थीं।

उन्होंने कहा कि गीता नकारात्मकता से बाहर निकालने वाला ग्रन्थ है। हमारे शरीर में जो मूलाधार चक्र की धारा बाहर की ओर बहती है, उसे गीता अन्दर करना सिखाती है। यही धारा जब उलटी होकर अन्दर की ओर जाती है तो "राधा" बन जाती है। यही "राधा" बनना ही गीता का योग-शास्त्र है। यह ज्ञान और विज्ञान का शास्त्र है। यह विजय का शास्त्र है और इसके जीवन-मूल्यों को बालकों तक ले जाना होगा। उन्होंने **"योगः कर्मसु कौशलम्"** का उद्घोष करते हुये गीतासेवी कार्यकर्ताओं के ग्यारह की संख्या का समूह हर अंचल में बनाने पर बल दिया।



श्री महेन्द्र काबरा जी ने अपने धन्यवाद-ज्ञापन में सभी आगन्तुकों, संचालकों और सहयोगियों का धन्यवाद करते हुये अपने वक्तव्य को इन पंक्तियों के साथ समाप्त किया-

"आज आवश्यकता है मानव को, आध्यात्मिक उपचार की,
संस्कार है एकमात्र औषधि, व्याकुल संसार की।"




इसके बाद प्रश्नोत्तर सत्र आरम्भ हुआ जहाँ संजय भैया ने सभी प्रश्नकर्ता साधकों के विभिन्न प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर देते हुये आगामी दीपावली के तुरन्त बाद संगमनेर में कार्यकर्ताओं और साधकों के "तीन दिवसीय चिन्तन शिविर" की घोषणा की जिसका सभी ने उल्लास के साथ करतल ध्वनि से स्वागत किया।




समापन प्रार्थना "गीता प्रचारक समिति" के सदस्य श्री मनोज भैया ने अपनी मधुर ध्वनि में की।

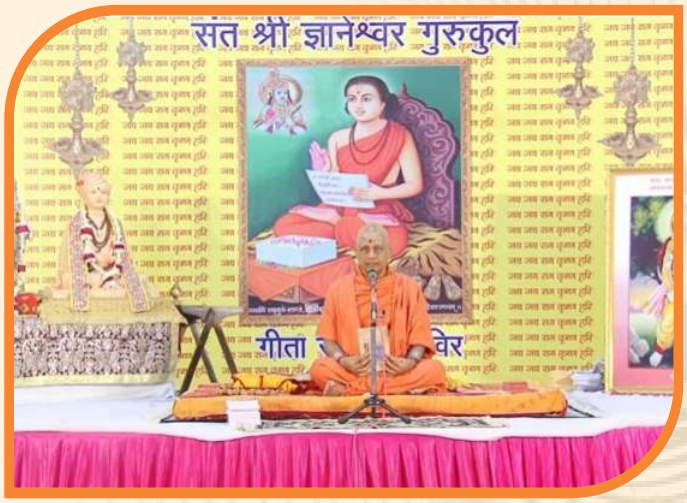
इसके पश्चात् सभी जनों को प्रसाद ग्रहण करने का आग्रह किया गया। इस प्रकार यह भव्य मैत्री मिलन सम्पन्न हुआ।

# सरल पठनीय श्रीमद्भगवद्गीता पुस्तक विमोचन

## Easy to Read Śrīmad-Bhagavadgītā Book Launch - 2/08/22

https://youtu.be/QuyUJ4Ss4ws

**सरल पठनीय गीता पुस्तक का विमोचन, 2 अगस्त 2022, वानप्रस्थ आश्रम, ऋषिकेश**




परम पूज्य स्वामी गोविन्द देव जी गिरि महाराज के कर-कमलों द्वारा पुण्य सलिला पतित पावनी गंगा मैया के तट पर वानप्रस्थ आश्रम, ऋषिकेश में **"सन्त श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल"** चिन्तन शिविर में गीता-परिवार द्वारा प्रकाशित **"सरल पठनीय गीता"** पुस्तक का विमोचन हुआ।

पूज्य स्वामी जी ने भगवती शारदा की वन्दना **"या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता"** के साथ "अनुस्वार,विसर्ग और आघात पद्धति पर आधारित" इस सुन्दर सरल पठनीय गीता के प्रकाशन की विधिवत् घोषणा, गीता परिवार की संस्थापिका श्रीमती ललिता मालपाणी जी के साथ मिल कर की। इस शुभ अवसर पर बोलते हुये गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. आशु गोयल जी ने कहा कि "दीर्घ काल से गीता सीखने वाले जिस समय की प्रतीक्षा रहे थे,वह समय आज आ गया और हम सबका स्वप्न आज साकार हो गया । गीता कैसे पढ़ी जाय- ऐसी सरल पठनीय गीता का प्रकाशन "गीता-परिवार" के लिये गौरव के क्षण हैं और हम सभी इन क्षणों का हिस्सा बन रहे हैं। इस घटना को गीता परिवार के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जायेगा और गीता-परिवार का यह कदम समग्र विश्व के लिये भी क्रन्तिकारी कदम होगा।"

उन्होंने कहा कि आगामी 3-4 दिनों में ही पुस्तक की प्रतियाँ "amazon.com" पर उपलब्ध होंगी । उन्होंने इस शुभ अवसर पर परम पूज्य स्वामी जी से आशीर्वचन कहने का अनुरोध किया ।

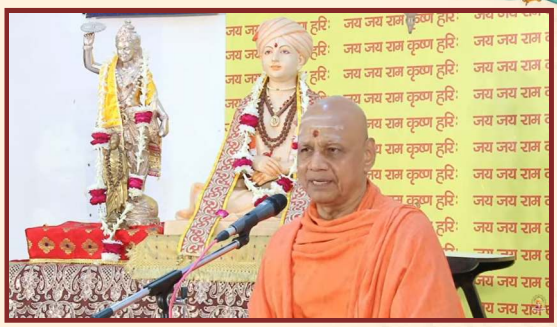
स्वामी जी ने सर्वप्रथम गीता परिवार के उन सभी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद और बधाई दी जिनके अथक प्रयास और श्रम से यह ग्रन्थ तैयार किया गया। उन्होंने कहा कि जिस किसी ने भी धन से, श्रम से, मन से अथवा अन्य किसी भी प्रकार से इस महान कार्य-यज्ञ में अपनी आहुति दी है, वह सभी धन्यवाद के पात्र हैं। उन्होंने इस अवसर पर **"लर्न गीता प्रोग्राम की कोऑर्डिनेटर्स"** तीनों दीदी-

ज्योति शुक्ला, रूपल शुक्ला और कविता वर्मा को मंच पर आमन्त्रित कर उन्हें बधाई देते हुये इस पुस्तक की एक-एक प्रति आशीर्वाद के रूप में दी।

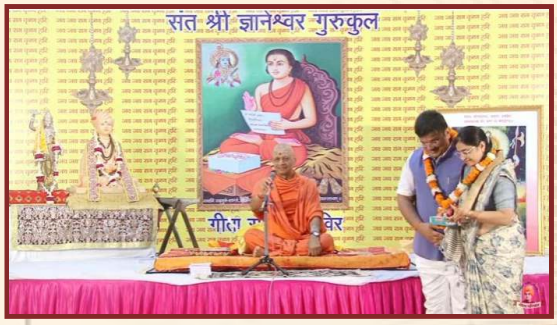
इस अवसर पर स्वामी जी ने कहा कि गीता परिवार ने न केवल गीता का प्रचार-प्रसार किया है बल्कि जिन गहराइयों के साथ किया है वह प्रशंसनीय है। यह सम्पूर्ण भारत को संगठित करने का कार्य है। भारत की वास्तविक राष्ट्र-भाषा तो संस्कृत ही है। गीता केवल भारत का ही ग्रन्थ नहीं - यह समग्र विश्व का ग्रन्थ है। उन्होंने इस अवसर पर राजस्थान धरा के महात्मा पूज्य स्वामी सोम गिरि जी महाराज का भी स्मरण किया जिन्होंने सर्वप्रथम **"सुगम गीता"** का प्रकाशन किया था। उन्होंने कहा कि उसी समय से उनकी यह सुप्त इच्छा थी कि इस प्रकार की सरल और सुगम गीता साधकों के कल्याणार्थ प्रकाशित की जाय और आज इस पुस्तक के प्रकाशन ने उनकी इसी इच्छा को जाग्रत किया है।

इस अवसर पर उन्होंने आशु भैया की धर्मपत्नी श्रीमती पूजा आशू गोयल को मंच पर बुलाकर उन्हें उनके जन्मदिन बधाई देते हुये उनका अभिनन्दन किया और आशीर्वाद दिया।

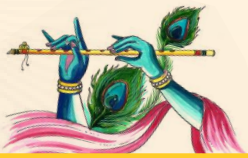










# गीता जयन्ती उत्सव

https://youtube.com/live/Sa12d9tfUYg



**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।**
**अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥4.7॥**
**परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।**
**धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।। 4.8।।**



गीता के 4 अध्याय के 6, 7 और 8वें श्लोक में भगवान ने जो वचन देकर हम सभी को आश्वस्त किया है, उन वचनों को हम कलयुगी मानवों को साक्षात् घटित होते हुये देखने का उत्तम अवसर मिला। गीता जयंती के विश्वव्यापी वृहद् आयोजनों में जब गीता परिवार के एक आवाह्न पर देश और विदेश से जुड़े लाखों साधकों ने 3 और 4 दिसंबर को धूम-धाम से गीता जयंती मनाई।

गीता जयंती - मोक्षदा एकादशी!

प्रकृति और परमात्मा को सर्वोपरि मानने वाले हम सनातन संस्कृति के लोगों ने पेड़, नदी, पहाड़, सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, नक्षत्र, पशु एवं पक्षी आदि अनेक अवयवों को आदर दिया है, अनेक पूजन कर्म में, त्यौहारों में उनकी विशेष आराधना भी की है।
किन्तु एक पुस्तक, एक धर्म ग्रंथ की पूजा उसकी जयंती मनाई जाती है। यह विषय ही कुछ अलग दिखता है, आखिर यह मामला है क्या? हममें से अनेक लोगों ने तो शायद यह पहली बार ही सुना होगा! जी हाँ हम बात कर रहे हैं विश्व के महानतम ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता के प्रकाट्य दिवस की और उसे अत्यंत ही विशाल भव्य रूप में विश्वभर में मनाने हेतु जुटे लाखों साधकों की। हमनें इस आयोजन में भगवान के विराट रूप का दर्शन किया जिसका वर्णन हम 11वें अध्याय में पढ़ते हैं।

**पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः।**
**नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥5॥**

"तुम मेरे सैकड़ों और हजारों अद्भुत दिव्य रूपों को विभिन्न आकारों और बहुरंगी रूपों में देखो।"

आखिर हृदय को अनेक आह्लादित स्पंदनों से भर देने वाला, मस्तक को गर्व से खड़ा कर देने वाला, आखों को प्रेम एवं श्रद्धा के भाव अश्रुओं से भर देने वाला यह अद्भुत दृश्य प्रकट किस प्रकार हो पाया !!!
आइये इसके संबंध में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करते हैं -

भगवान् कहते हैं कि मैं अपनी प्रकृति को अधीन करके अपनी योगमाया से प्रकट होता हूँ और हमारे आराध्य श्रीकृष्ण ने अपनी योगमाया से इसकी प्रेरणा दी। हम सभी के प्रेरणा स्तोत्र एवं गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आदरणीय डॉ. संजय मालपाणी भैय्या जी ने 28.09.2022 को गीता के परम प्रचारकों के मन में विशाल रूप में गीता जयंती मनाने की चिंगारी दी।

इस चिंगारी को लेकर गीता परिवार की पूरी कार्यकारणी अपने-अपने कार्यों में लग गयी और जुट पड़ी गीता परिवार की वानर सेना राम सेतु निर्माण में। जिसके हिस्से जो आया उसने वह काम पकड़ लिया।

इस कार्यक्रम में 800 से अधिक रजिस्ट्रेशन हुये। लगभग 1,00,000 लोगों ने गीता पारायण किया। इस अवसर पर देश विदेशों में विभिन्न स्थानों पर अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जैसे - नाटिका, चिंतन, रंगभरो प्रतियोगिता, गीता ज्ञानपति प्रतियोगिता आदि। प्रभात फेरियाँ भी निकलीं। गीता पठन की प्रतियोगिताएँ भी हुईं। घर, मंदिर, उद्यान, सभागृह, पाठशाला आदि स्थानों पर गीता जयंती के कार्यक्रम मनाये गये हैं।










# आओ गीता सेवी बनें

## Be a Geeta Volunteer

https://youtu.be/kH5gW4IWsEQ

प्रतिमास की भांति अगस्त में आओ गीता सेवी बनें (Be a Geeta Volunteer) का आयोजन किया गया जिसमें स्तर 1 से स्तर 4 तक के सभी साधक जो गीता परिवार में अपनी सेवा देना चाहते वे सभी ज़ूम, youtube, facebook के माध्यम से जुड़ें। कार्यक्रम का आरंभ प्रार्थना के साथ हुआ, जिसे Learngeeta की बाल सखा टीम के सदस्य श्री राहुल गौर भैया के द्वारा संपन्न किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजय जी मालपाणी भी जुड़े एवं अपनी ओजस्वी वाणी से सभी को सेवा पथ पर आगे बढ़ने को प्रेरित किया।

इसके पश्चात् अग्रिम संचालन गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं Learngeeta Program के प्रोग्राम डायरेक्टर डॉ. आशू जी गोयल भैया के द्वारा किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम क्रमबद्ध ढंग से पूर्ण हुआ। कुल 9 डिपार्टमेंट्स के द्वारा विभिन्न प्रेजेंटेशन दिए गये -

Presentations-

1. Tech - **Priyesh Doshi Ji**
2. Software Development - **Shri Manish Tomar Ji**
3. Creative Content Writing - **Smt. Jigisha Shah Ji**
4. Group Coordinator - **Shri JP Pandey Ji**
5. Trainer - **Smt. Alpana Kandalkar Ji**
6. Graphics & Animation - **Smt. Harsha Ji**
7. Calling & Migration - **Shri Mahesh Shewale Ji**
8. Admission Dept. - **Smt. Punita Prasad Ji**
9. Bal Sakha - **Ms. Shravani Naik**

इसके पश्चात् साधकों के लिये लाइव प्रश्न उत्तर का सत्र भी हुआ। अंत में समापन प्रार्थना एवं शुभकामनाओं के साथ सत्र का समापन किया गया।









# भगवद्कृपा का प्रत्यक्ष दिग्दर्शन



**वसुदेवसुतं देवं, कंसचाणूरमर्दनम्।**
**देवकी परमानन्दं, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।**



विश्व साहित्य में श्रीमद्भगवद्गीता का अद्वितीय स्थान है। यह साक्षात् भगवान के श्रीमुख से निःसृत परम रहस्यमयी दिव्य वाणी है। इस में भगवान ने अर्जुन को निमित्त बनाकर मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये उपदेश दिया है। इस छोटे से ग्रंथ में भगवान ने अपने हृदय के बहुत ही विलक्षण भाव भर दिये हैं, जिनका आज तक कोई पार नहीं पा सका और न ही पा सकता है।

भगवान की दिव्य वाणी श्रीमद्भगवद्गीता के भाव बहुत ही गम्भीर और अनायास कल्याण करने वाले हैं। उनका मनन करने से साधक के हृदय में नये-नये विलक्षण भाव प्रकट होते हैं। समुद्र (रत्नाकर) में मिलने वाले रत्नों का तो अंत आ सकता है, पर गीता में मिलने वाले मनोमुग्धकारी भावरूपी रत्नों का अंत कभी नहीं आता।

श्रीमद्भगवद्गीता की महिमा अगाध और असीम है। यह भगवद्गीता ग्रंथ प्रस्थानत्रयी में माना जाता है। मनुष्यमात्र के उद्धार के लिये तीन राजमार्ग प्रस्थानत्रय के नाम से कहे जाते हैं। एक वैदिक प्रस्थान है, जिसको उपनिषद् कहते हैं। एक दार्शनिक प्रस्थान है, जिस को ब्रह्मसूत्र कहते हैं और एक स्मार्त प्रस्थान है, जिस को भगवद्गीता कहते हैं। उपनिषदों में मंत्र है, ब्रह्मसूत्र में सूत्र हैं और भगवद्गीता में श्लोक हैं।

भगवद्गीता में श्लोक होते हुये भी भगवान की वाणी होने से मंत्र ही हैं। इन श्लोक में बहुत गहरा अर्थ भरा हुआ होने से इनको सूत्र भी कह सकते हैं। उपनिषद् अधिकारी मनुष्यों के काम का विषय है और "ब्रह्मसूत्र" विद्वानों के काम का विषय है, परन्तु भगवद्गीता सभी के काम का विषय है।

भगवद्गीता का उपदेश महान अलौकिक हैं। इस पर कई टीकाएँ हो गयी हैं और टीकाएँ होती चली जा रही हैं। इस छोटे से ग्रंथ पर सर्वाधिक टीकाएँ उपलब्ध हैं क्योंकि यह अनन्त की वाणी है, इसलिये इस के भाव भी अनन्त हैं।

गीता एक प्रासादिक ग्रंथ है, इस का आश्रय लेकर पाठ करने मात्र से बड़े विचित्र, अलौकिक और शांतिदायक भाव स्फुटित होते हैं। इसका मन लगाकर पाठ करने मात्र से बड़ी शान्ति मिलती है। मन में कोई शंका होती है तो पाठ करते करते उस का समाधान हो जाता है।

ऐसी विलक्षण वाणी श्रीमद्भगवद्गीता को विश्व में प्रचारित, प्रसारित करने का बीड़ा गीता परिवार ने उठाया है। भगवद्कृपा का प्रत्यक्ष दिग्दर्शन हो रहा है।



# ऑनलाइन भगवद्गीता

## जीवन की सार्थकता



पिछले कई वर्षों से भगवद्गीता सिखाने का थोड़ा बहुत अनुभव था, किंतु वह सामने बैठकर सामूहिक अनुपठन के साथ ही किया था। जून 2020 में LOCK DOWN के समय अचानक गीता परिवार की ओर से मैसेज आया कि ऑनलाइन गीता संथा कक्षा में शामिल होना है। पहले तो मैंने सोचा कि मैं इसे कर ही नहीं पाऊंगी, इसलिये मैंने इसका कोई जवाब नहीं दिया। एक सप्ताह के बाद फिर से मैसेज आया की ज्वाइन तो करना ही है। जैसे तैसे तय समय में मीटिंग ज्वाइन कर ली। पहले दिन तो थोड़ा कठिन लगा, किंतु सोचा की अभ्यास से यह किया जा सकता है और फिर कुछ समय की ही तो बात है, फिर तो सब कुछ पहले जैसा ही सीखना होगा। आश्चर्य की बात है कि समय कैसे बीतता चला गया और हर दिन कुछ टेक्निकल बातें सीखते हुये उस काम को अपने आप ही करते चले गये।

इसी दौरान Learn Geeta App भी तैयार हो गई और गीता परिवार का दायरा बढ़ता ही गया। परम पूज्य स्वामी जी के शुभ वरदहस्त के साथ आदरणीय संजय भैया और आदरणीय आशू भैया और उनकी पूरी टीम के अथक परिश्रम से लर्नगीता का कार्य सुव्यवस्थित और सुचारु रूप से चल पड़ा। L1, L2, L3 और L4 इस तरह कारवां आगे - आगे बढ़ता ही जा रहा था और मन में अत्यंत संतोष का अनुभव भी हो रहा था।



गीता परिवार के जो पांच सूत्र हैं, वह इस ऑनलाइन गीता संथा के माध्यम से और अधिक कार्यान्वित होंगे, ऐसा मेरा मानना है, क्योंकि जब पूरे घर में भगवद्गीता गुंजायमान होगी तो घर का वातावरण अपने आप ही पवित्र एवं प्रसन्न रहेगा, इसका एक मुख्य कारण जो मैंने देखा, वह यह है कि इस दौरान महिलाएं इसमें अधिक संख्या में शामिल हो रही हैं, जिसमें अधिकांश महिलाएं ऐसी हैं जो ज़ूम कक्षा तो क्या मोबाइल ऑपरेट करना भी कम ही जानती हैं। शुरु शुरु में उन्हें घर का कोई सदस्य सहायता कर देता है और समय के साथ-साथ वह सब कुछ सीख जाती हैं।

ये महिलाएं घर के सभी सदस्यों को प्रसन्न रखते हुये अपनी कक्षा सुचारु रुप से करती हैं। इसका उदाहरण मैंने अपनी एक कक्षा में प्रत्यक्ष देखा है कि एक महिला प्रतिभागी अपने पोते को संभालते हुये तथा कभी कभी रसोई का कार्य करते हुये भी कक्षा में पूरा ध्यान रखती थी। इससे यह ध्यान में आया की महिलाएँ अपने घर के कार्यों में व्यस्त रहते हुये भी भगवद्गीता सीखने के लिये पूर्ण उत्साह के साथ समय निकालती हैं।

एक और वृद्ध साधिका जिन्हें पंढरपुर की वारी में जाना था, तो उन्होंने एक दिन पहले बता दिया कि कल से मैं वारी में रहूंगी, लेकिन कक्षा में भी उपस्थित रहूंगी, मुझे अन्म्यूट ना किया जाये, मैं रोज के श्लोक केवल सुनती रहूंगी, इससे पता चलता है कि मन में कितनी ललक है सीखने की।

महाकवि महाराजा भर्तृहरि ने लिखा ही है:



**सत्संगति: कथय किं न करोति पुंसाम्**

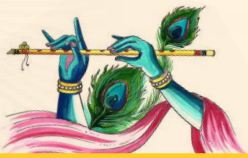


मनुष्य को यदि संगति अच्छी मिले तो वह सदैव सत्कार्यों में ही रहता है।

भगवद्गीता सिखाने के इस महत्कार्य से मन को जो संतोष मिलता हैं वह अकथनीय है, इस कार्य में जुड़ने से जीवन की सभी समस्याओं का समाधान स्वत: ही हो जाता है।

परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि गीता परिवार के माध्यम से इसी प्रकार गीता सेवारत रहूं।

परमपूज्य स्वामी जी के चरणों में शत शत वंदन।



# Sparkling Hearts

## 1. " భగవద్గీత - నా జీవన పరివర్తనానుభవం "

నా పేరు కృష్ణ మోహన్ రామతేరాల. నా నివాసం హైదరాబాద్, తెల్లంగాణ రాష్ట్రం. **36** సంవత్సరాల్లుపర్భుత్వ ఉద్యోగం చేస్తూ, జిల్లా వ్యవసాయాధికారిగా ఉద్యోగ విరమణ చేశాను. ఒక రకంగా ఉద్యోగ విరమణతో జీవితంలుపు తిరుగుతుందో. ముఖ్యమైన బాధ్యతలులేక నీరసం, బద్ధకం ఆవహిస్తుంది. అధికారహోదా మాయమవుతుంది. పలుకరించేవారు అరుదవుతారు. మానసికంగా త్వరగమనం మొదలవుతుంది. ఆ పరిస్థితులలోనన్ను జూలై, **2021** లో గీతాపరివార్ లో సభ్యుడనయ్యాను. అప్పట్నుంచి ఇవాళ వరకు మన తక్కాల దినచర్యలలో నిద్ర బద్దకాన్ని భగవద్గీత, నా లోని తమోగుణాన్ని తరుముతూ కర్మాంగీకృత వెలుగురేఖల్లో పరిసర్పించింది. భగవంతుని అపార కృపాదృష్టితో, ఒక నూతన జ్ఞానచైతన్యం నా జీవితంలోకి ప్రవేశించింది.

జూమ్ తరగతిలో సాధకుల రూపంలో కొత్త పరిచయాల్లు, జిజ్ఞాస, ప్రజ్ఞతో కూడిన వారి ఉత్సాహం, నాలో క్రొడీకరించి ఆసక్తినిరేపింది. సాధారణంగా ఎవర్నీకైనా శుద్ధ సంస్కృత ఉచ్చారణ కఠినతరమనిపిస్తుంది. కానీ గీతాపరివార్ వారు రూపొందించిన బోధనా విధానం గీతా పఠనాన్ని సులభతరం చేస్తుంది, విశ్వవ్యాప్తం నిర్వహిస్తుంది. వ్యాకరణ సహిత శ్లోక అనువాదాలు, వ్యాసార్థ, ఆధ్యాత్మ, అవగాహన శుద్ధ ఉచ్చారణ, గీతాపఠనంపట్ల అనురక్తిని రేపింది. ప్రోత్సహించడం వాలంటీర్ల ఉత్సాహాన్ని రేపింది. వారాంతమ్ విశ్లేషణలు గీతలో భావగర్భితాంగాన్ని జిజ్ఞాసకోశాలను వెల్లడికితీశాయి. రాజులు, నియమాలు దోహదమాయ్యి. ముందట్ స్థాయిన్నుండి నిమిషగవ స్థాయివరకు, స్నేహితుల్తోనే, సహభావంతో కూడిన పరిశీలనల అధ్యయనంలో నా యాసంతో సహా, **18** అధ్యాయాల భగవద్గీత శుద్ధఉచ్చారణ తరగతులను తృప్తికరంగా పూర్తి చేస్తుకున్నాను. ఖండాంతరాలు దాటిన సాధకుల పరిచయం, ఆత్మీయతతో కూడిన పరివార్ కుటుంబం చాయల్లో, పాత అనుబంధాలు మబ్బుకమ్మాయి.

ప్రధానవిషయంలోంటంటే, సాధకుడిగా ఉన్నట్టూనే 'సేవ'గా రంగవల్లి వేయడంలో, కొత్తత సాధకులకు మార్గదర్శిగా ఉండడం, నాకు చాలా సంతృప్తినే కలగజేస్తుంది. సాంకేతిక సహాయకులుగా, సమూహ సమన్వయకర్తగా, సందేహనివారకబృందసభ్యులుగా, విశ్వేచ్ఛనాబృంద సభ్యులుగా, పర్యవేక్షకబృందం సభ్యులుగా, నాతోటి సేవల సహకారంతో, నానాంతో నిర్వర్చుకోవడం జరిగింది. వారి సహకారానికి చాలా కృతజ్ఞతలు.

గీతా పరివార్ సంస్థకు అంకురార్పణ చేసి, విశ్వవ్యాప్తం భగవద్గీత సారభాలు వాదజల్లడానికి సంకల్పించిన సచ్చిదానంద గోవిందభగవన్ గిరిజా మహారాజ్ గారికి నా హృదాభివందనాలు. సంస్థ ప్రోత్సాహానికి మూలస్తంభాల్లుగా కృషి చేస్తున్న శారి సంజయ్ మల పానా గారికి, శారి ఆశు అగర్వాల్ గారికి, సమస్త సాంకేతిక బృందాలకు, మరియు నాకు వేదాధ్యయనం ప్రసాదించిన గురుమలకు, సహాధ్యాయులుగా నా మార్గాభివృద్ధికి తోడ్పడినవారందరికి నా హృదయపూర్వక ధన్యవాదాలు. శారి కృష్ణం వందే జగద్గురుమ్.



-కృష్ణమోహన్ రామ తేరాల

## 2. એક સુખદ યાત્રા

જીવનમાં અનેક ચઢાવ ઉતાર આવે છે, જે કંઈક શીખવી જાય છે. મારા પિતા જેમણે ભગવદ્ગીતાના સંદેશને ઘણે અંશે જીવનમાં ઊતાર્યો હતો,મને અનેક વાર કહેતા તું એકવાર ગીતા વાંચવાનું ચાલુ કર.પણ સંજોગોવશાત ન થઈ શક્યું. એમના સ્વર્ગવાસ પછી ઈશ્વર પ્રેરણાથી પંદરમો અધ્યાય વાંચવાનું શરુ કર્યું જે તેરમાના દિવસે પૂર્ણ થયો,ને આંખમાંથી અશ્રુધારા વહેવા લાગી .કંઈક ન સમજાય એવું બન્યું ૨-૩ દિવસમાં કૃષ્ણ કૃપાથી મને ગીતા પરીવારમાં જોડાવા માટેની લીંક મળી ને શરુ થઈ મારી ગીતા પરીવાર સાથેની યાદગાર યાત્રા. L1માં ૧૨ અને ૧૫ અધ્યાય શીખ્યા પછી L2માં જોડાઈ ટ્રેનર દીદીના પ્રોત્સાહન થકી જિજ્ઞાસુ અને પથિકના પરીક્ષા પૂર્ણ ગુણાંક સાથે ઉત્તીર્ણ કરી.ટ્રેનર ,પરીક્ષક તરીકે સેવા આપવાનું સદ્ભાગ્ય પ્રાપ્ત થયું .દરેક તબક્કે કંઈક નવું શીખવા મળ્યું .સદ્ભાવના ,પ્રેમ ,અનુશાસન,શિસ્તના પાઠ શીખવા મળ્યા નિષ્કામ ભાવનાથી કાર્ય કરવાની પ્રેરણા મળી. ગીતા પરીવાર સાથે જોડાયા પછી જીવન પ્રત્યેનો અભિગમ સકારાત્મક થઈ ગયો છે.

ડોક્ટર હીના શાહ, સૂરત

## 3. பகவத் கீதையுடன் என் பயணம்

நான் பாங்கில் வேலையில் சேர்ந்ததிலிருந்து, ரயில், மற்றும் பஸ்ஸில் பயணித்து, வீட்டை விட்டுக் காலை 8 மணிக்கு கிளம்பினால், துணை மானேஜராக (என்னிடம் சாவி இருந்ததால்), 9 மணிக்கு பாங்கைத் திறக்கும் பொறுப்பில் தொடங்கி திரும்பவும் மாலை 8.30 அல்லது 9 மணிக்கு பாங்கை மூடி, 10.30 அல்லது 11 மணி வீடு சேர்வதுமாய், நாள் நேரம் கடந்து செல்வதறியாமல், வாழ்க்கை தொடர்ந்தது.

ஆனால், வேலை செய்யும் இடத்தில், நிறைய மனிதர்களை, சக ஊழியர்களை , வாடிக்கையாளர்களை வெவ்வேறு குணாதிசயங்களுடன் சந்திக்கவும், கூட வேலையில் ஈடுபடவும் முடிந்தது.

இதன் நடுவில், ஒரு முறை ஒரு வாடிக்கையாளர், பகவத் கீதை புத்தகத்தை அன்பளிப்பாகக் கொடுத்தார். அதிலிருந்த முதல் அத்தியாயத்தில், முதலான ஸ்லோகத்தில், திருதராஷ்டிரர் , சஞ்சயரிடம், தன் மைந்தர்கள் பாண்டவர்களுடன் போராட எவ்வளவு தயாராகியுள்ளார்களென்று, சுயநலத்துடன் கேட்பது, வெறுக்கத்தக்கதாக இருந்தது. அதனால் நான் அதை மேலே படிக்கவில்லை.

ஆனால், வேலையிலிருந்து பணி ஓய்வு பெற்ற பிறகு, கீதா பரிவாரில் சேர்ந்தது கீதை கற்கும் பயணத்தில், நான் இயற்கையாகவே பின்பற்றிய வரைமுறைகள், மற்றும் சில கேள்விகளுக்கு பதில் கிடைக்குமாறு அமைந்தது, கீதை என்னைக் கவர்ந்திழுத்தது.

நாம் அனைவரும், இந்திரியங்களுக்கும், புத்திக்கும் கட்டுப்பட்டு இயங்கும் போது, மாயையான வாழ்வில் சிக்குகிறோம். அதுமட்டுமல்லாமல் நம் மனம் என்கிற சக்தி, நாம் வளர்வதற்கும், சிதைவதற்கும் காரணமாகிறது. மனதை ஒருமயமாக்கி, அதை அடக்கி கையாள்வதற்கு, நமக்கு கீதை உறுதுணையாகிறது.

நாம் வாழ்வின் பவ சாகரத்தைக் கடக்க, த்வைதமாக (இரு விதமாக) வரும் பல இன்னல்களை, சுகம்- துக்கம், வலி - இன்பம், பயம் -ஆனந்தம், அடிமை - விடுதலை, கடந்து செல்ல, கீதை வழி காட்டுகிறது.

வாழ்வின் இன்னல்களிலிருந்து ஓடவோ, ஒளியவோ முற்படாமல், முக்தியைக்கூட பெரிதாகக் கருதாமல், பக்தி மார்கத்தில் இருந்து கொண்டு, கிருஷ்ணரை சரணடைந்து, எப்பொழுதும், எதிலும் இறைவனைக் காணப்பெற்று, மற்றவர்க்கு முடிந்த உதவி செய்து பின், இறையடி சேர முயல்வதற்கு கீதை வழிகாட்டுகிறது.

நான், என்னை முற்றிலும் அமைதியானவளென்று நினைத்துக்கொண்டிருந்தேன். பிறகு, வெளி உலகில் மற்றவர்கள் துன்புறுத்திப் பேசிய போதெல்லாம், எனக்குள் கோபம் வெளியில் தெரியாமல் எழுவதைக் கண்டேன்.

கீதையின் பாதையில் சென்றதால், நான் புகழ்ச் சொல்லுக்கும், பழி சொல்லுக்கும், மனதில் இடம் கொடுக்கவில்லை. நான், என்னை உடலோடு அல்லது மனதோடு நிலைநிறுத்திக்கொள்ளாமல், பரமாத்மவின் ஒரு பாகமாக நினைக்கக் கற்றுக்கொண்டேன். இதன் மூலம் மற்றவர்கள் பேசுவதைப் பொருட்படுத்தாமலிருக்கத் தெரிந்து கொண்டேன்.

இந்த புரிதலுடன் எப்பொழுதும் இறை சிந்தனையில் இருந்து கொண்டு, மற்றவர்களுக்கு பயன்படுமாறு ஏதாவது சேவை செய்வது, கீதையின் ஸ்லோகத்தின் விரிவுரை எழுதுவதோ, உரையாடலின் மொழி பெயர்ப்பு செய்வதுமாக, கீதையை எல்லோரும் கற்று, வாழ்வில் கடைபிடிக்க உதவும் வகையில் சேவை செய்வதை, வாழ்வின் வழிமுறையாகக் கருதுகிறேன்.

கீதையை எப்போதும் வாழ்வில் கடைபிடிக்க நினைக்கும்,



Shantha Sankaranarayanan, Thane

## 4. গীতা পৰৱিাৰৰ সতেমে োৰ অভজি্ঞতা

গীতা পাঠ কৰবিলৈ শকিমি বলি ভাবে োতইে গীতা পৰৱিাৰৰ পৰা গীতা শকিবিলৈ লংিক এটা পালে োঁ আৰু লগে লগে পঞ্জীয়ন কৰলি োঁ। যে োৱা বছৰ (২০২১) এপ্ৰলিত। প্ৰশকি্ষক আছলি ৰূপল শুক্লা বাইদউে। অন্যান্য ব্যস্ততাৰ বাবে সইেবাৰ এটা নদেুটা শ্ৰণৌহে কৰবি পাৰলি োঁ।

মন বান্ধলিছৈলি োপছিৰ বাৰ ভালদৰে শকিমি। পছিৰ মাহত আকে ৌপঞ্জীয়ন কৰলি োঁ। শ্ৰণৌ আৰম্ভ হ'ল। আমাৰ ল'ৰা ছে োৱালী হমিকৰিণ আৰু নয়িৰকণাৰ লগত একলেগে অতি উৎসাহৰে শকিবিলৈলে োঁ।

লভেলে 1-ৰ শষেৰ ফালে আমি তনিওিটাই গীতা গুঞ্জন পৰীক্ষা দি উত্তীৰ্ণ হলে োঁ। মই এটা নয়িম বান্ধলিছৈলি োঁ। আমাৰ যকিইেটা অধ্যায় শকিা হয়, সইে অধ্যায় কইেটা কমওে এবাৰকৈ পাঠ কৰমি। এইক্ষত্রেত আমি কাকীজীৰ অডওি' বজাই হাতত পডিএিফ-ৰ প্ৰণি্ট আউট হাতত লৈ পাঠ কৰছিলি োঁ।

লভেলে 1 শষে হে োৱাৰ পাছত লভেলে 2 আৰম্ভ হ'ল আৰু আমি একে উৎসাহৰে শকিবিলৈ লে োঁ। আমি ইতমিধ্যে শকিা গীতাৰ অধ্যায়কইেটা সদায় কমওে এবাৰকৈ পাঠ কৰছিলি োঁ আৰু এনকৈে পাঠ কৰাটে োঁ নয়িম কৰি লছৈলি োঁ। নতুন অধ্যায় শকিা শষে হে োৱাৰ লগে লগে সদায় পাঠ কৰা অধ্যায়ৰ সংখ্যাও এটা এটাকৈে বাঢ়যিাবলৈধৰলি।

এনকেৈ প্ৰস্তুতি চলাই গীতা জিজ্ঞাসু পৰীক্ষাত অৱতীৰ্ণ হৈ উত্তীৰ্ণ হ'লোঁ। ১১ বছৰীয়া হমিকৰিণে ৯৯%, ৭ বছৰীয়া নয়িৰকণাই ৯৭% আৰু মই আটাইতকৈ কম ৯৫% পালোঁ।

গীতা পৰিৱাৰৰ গীতা শিক্ষা বনামূলীয়া। গীতা শিকাৰ বনিময়ত কিবা দয়িাৰ ইচ্ছা আছলি। তনেতেৈ 'গীতা সৰ্বৌ'-ৰ বষিয়ে গম পালোঁ আৰু ছপ্টেম্বেৰ মাহত টকৈনকিলে এছছিটণ্টে ৰূপে সৰো প্ৰদান কৰাৰ সুবধিা লাভ কৰোঁ। পাছলৈ অন্যান্য বভিন্নি ৰূপত সৰো দয়িাৰ লগতে ২০২২ চনৰ মে মাহত আৰম্ভ হোৱা প্ৰথম অসমীয়া গীতা শিক্ষণ বটেচৰ প্ৰশিক্ষক ৰূপে যোগদান কৰবিলৈ পাও।

গীতা পৰিৱাৰৰ হৈ সৰো আগবঢ়ায় সময়ত এক বশিষে লাভ হছৈলি। তাত বভিন্নি ব্যক্তৰি লগত সংযোগ হছৈলি, যসিকলনেতিৌ গীতাক জীৱনত প্ৰয়োগ কৰে। এই সকল ব্যক্তৰি সান্নধিয অনন্য। এইসকল ব্যক্তৰি সংগত গীতা কনেকৈ জীৱনত প্ৰয়োগ কৰবি পাৰতিাক প্ৰত্যক্ষ ভাৱে শকিাৰ সৌভাগ্য হছৈে।

আহক আমি সকলোৱে গীতা শকিোৱাত আৰু গীতা জীৱনত প্ৰয়োগ কৰাত আৰু অলপ বছৈি সময় দওঁ। ব্যস্ততাৰ মাজতো ইয়াক কৰলিে আমাৰ সময়ৰ সুব্যৱহাৰৰ আৰু সু-বনিয়িোগ হ'ব।



Shri Tarun Jyoti Gogoi, Naharkatia

## 5. माझे मनोगत

एप्रिल **2021** पासून गीता परिवारात माझा प्रवेश झाला आणि माझ्या जीवनात आमुलाग्र बदल झाला. मला सकारात्मक ऊर्जा मिळाली आणि या पवित्र देववाणीची अमृतधारा प्राशन करण्याचे भाग्य मला मिळाले. माझ्या हातात श्रीकृष्णाची गीता यावी आणि तिची गोडी लागावी याचे श्रेय सर्वस्वी गीता शिकविणाऱ्या माझ्या भगिनींना जाते. रोज सकाळी आठ कधी वाजतात आणि आपण कधी वर्गाला बसतो याची चातकासारखी मी वाट बघत असे. श्लोक वर्गातच पाठ होऊन जात आणि त्यामुळे पहिल्या दोन परीक्षा सहज सहज मला देता आल्या आणि त्यात यशही मिळाले.

अशातच गीता परिवाराकडून साधकांना ऋण फेडण्याची अपूर्व संधी **creative writing team** मध्ये लिखाण केल्याने मिळाली. जीवाभावाचा परिवार मिळाला. ज्यांना कधी बघितले नाही अशा सगळ्यांशी अतूट नाते निर्माण झाले. ते गीते- पुरतेच मर्यादित न राहता सुखदुःखाची आमच्यात देवाणघेवाण सुरू झाली. पायरी- पायरीने स्वतःच आमुलाग्र बदल होतो आहे.

पुढची संधी मिळाली ती विवेचन भाषांतर करण्याची. शनिवार रविवार एक तास श्रवणभक्ती करायची भाषांतराला सुरुवात करायची असा मला ध्यासच लागला. सुरुवातीला खूप त्रास व्हायचा. मोबाईल साथ देत नसे, कधी कधी पूर्ण विवेचन डिलीट होऊन जायचे, पण हळूहळू सगळे जमू लागले. अचूक कसे लिहिता येईल याची दक्षता मी घेते. आता गीता परिवाराकडून मला काय मिळाले याची यादी तर खूपच मोठी आहे.

"अद्वेष्टा सर्व भूतानां मैत्र: करुण एव च" यानुसार कोणाचा द्वेष न करता सर्वांशी मैत्री भाव वाढीला लागला. मदत करण्याचा स्वभाव वृद्धिंगत झाला. गीता मिलनाच्या प्रसंगी आशुभैयांशी गीतेच्या संदर्भात सहज गप्पा मारता आल्या. शारीरिक दुःखाच्या प्रसंगी गीतेने साथ दिली. शरीर हे वरवरचे आहे त्याचे अवाजवी येवडे लाड़ करू नये हे समजले. लोभ, मोह, माया यापासून दूर राहावे हे गीतेने शिकवले. ज्ञानेश्वरांनी म्हटल्याप्रमाणे " जे जे आपणासी ठावे । ते इतरांशी शिकवावे । शहाणे करूनी सोडावे सकलांसी॥

यानुसार अनेक मैत्रिणी आणि नातलगांना गीता परिवारात जोडले. आज माझ्याप्रमाणेच तेही **L4** लेव्हल पर्यंत शिकून ट्रेनर आणि टेक असिस्टंट ची सेवा देत आहेत.

मनाविरुद्ध घडलेल्या गोष्टी सोडून द्यायला मी शिकले. राग आला तरी तो दाखवायचा नाही मात्र त्रास होत असेल तर त्यापासून दूर राहायचे हे मला गीतेने शिकवले. श्रद्धा आणि भक्ती दोन्हीचे पारडे सारखे ठेवले तर दुःखावरही आपण सहज मात करू शकतो हे समजले. गीतेत सांगितल्याप्रमाणे " सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो " भगवंत आपल्या आत्म्यात विराजमान असल्याने त्याला दुःख होणार नाही असे वागले जाते. सतत भगवंताचे नामस्मरण होत असल्याने आपला अंत:काळ सुखाचा होईल हा विश्वास आहे. अठराव्या अध्यायात सांगितल्याप्रमाणे

यत्र योगेश्वर: कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर :। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नितीर्मतिर्मम ।।

आपण कृष्ण भक्ती करतो आहोत त्यामुळे जीवन यशस्वी होणारच हा विश्वास वाटतो. गीतेमुळे जीवन आनंदी झाले आहे यात शंकाच नाही.

सौ सरिता भानुप्रताप देशमुख. पुणे.



# स्वामी जी का दिव्य नाम

!! परम पूज्य गुरुदेव गोविंदगिरिजी महाराज !!



प - परम पूज्य गुरुदेव जी को प्रणाम करते हम।

पू - पूजनीय उनका कार्य विश्वरूप बन रहा है।

गु - गुरूजी की वाणी हमें गीता ज्ञान समझाती है।

रु - रूक्ष जीवन में उल्हास की आशा जगाते हैं।

दे - देश विदेश में गीता ज्ञान का प्रचार कर रहे हैं।

व - वचन हम देते हैं कि आपकी गीता की पताका सदा फहरायेंगे।

गो - गोविंद-कृष्ण-राम- हरि सभी है आपमें।

वि - विज्ञान युग से गीता जोड़ी है आपने ।

द - दस दिशाओं में गीता गुंजन हो रहा है।

गि - गिरी कंदराओं में गीता ज्ञान पहुँच रहा है ।

री- रीति - निति सत्य पर यह कार्य हो रहा है ।

जी - जीवन में सभी को परीवर्तन दिख रहा है ।

म- महान गीता, महान गुरुदेव का यह कार्य ।

हा - हाँ! हम जन जन तक पहुँचायेंगे।

रा- राम राज्य की स्थापना करके विश्व में शांति बनायेंगे ।

ज- जय-जय कार महान गुरुदेव का आशिष हम पायेंगे ।

~ रजनी प्रकाश पाटील धुळे, महाराष्ट्र





# जेल में गूँजे गीता के श्लोक



Groups.learngeeta.com के माध्यम से केंद्रीय जेल भोपाल में लगभग 50 से अधिक कैदियों को श्रीमद्भगवद्गीता सिखाने का कार्य आरंभ किया गया। Learngeeta के कार्यकर्ता बड़े ही निष्ठा भाव से इन कक्षाओं का संचालन कर रहे हैं। हमारे जेल के भाई स्पष्ट रूप से उच्चारण करना तो सीख ही रहे हैं, साथ साथ सभी जेल के भाईयों में गीता जी के प्रति जिज्ञासा और प्रेम भी जागृत हुआ है। सभी भाइयों ने आशू भैया द्वारा दिये गये विवेचन का आनंद लिया और अपने जीवन पथ पर भक्तियोग को कैसे शामिल करें यह भी जाना, उनके मन में उठे सवालों का जवाब भी भैया ने बखूबी दिया। आशा है इसी प्रकार विभिन्न संस्थाओं में जब गीता जी पहुंचेगी, तो शीघ्र ही हम नवीन भारत का निर्माण देख पाएंगे।

श्रीमती अंशु गर्ग जी, श्री विकास वैद्य जी, श्री मीनानाथ लाखोटे जी के समन्वय से विशेष डेमो क्लास की व्यवस्था की गई, जहां हमने कैदियों की समस्याओं को समझा। संसार में वैचारिक प्रदूषण है, जिसके कारण आज लोगों की बुद्धि दुर्बुद्धि में परिवर्तित हो गई है। यही कारण है कि लोग अपराधिक प्रवृत्तियों को अपनाते हैं और अपराधी बनते हैं। कुछ कैदियों में हीन भावना और डिप्रेशन देखा गया है।

जेलों में गीता के गुंजन से कैदियों की बुद्धि, विचार एवं भावनाओं में परिवर्तन होगा जिससे वे सत्प्रवृत्तियों को अपनाकर अपना आगे का जीवन सुखी, मंगलमय बनाएंगे। विकास वैद्य जी ने उन्हें गीता पढ़ने का महत्त्व बताया और कहा - गीता हमें सिखाती है कि हम मनुष्य योनि में क्यों पैदा हुये



है, हमारे जीवन में हमें विवेक और बुद्धि का योग सिखाती है। शुद्ध उच्चारण का महत्त्व बताते हुये उन्होंने गीता के उच्चारण के साथ ऑटोमैटिक प्राणायाम हो जाता है, न केवल मन अपितु तन की भी शुद्धि हो जाती हैं। जेल के अधिकारियों ने भी इस कक्षा में भाग लिया और प्रभावित हो गीता कक्षाओं के लिये groups.learngeeta.com पर कैदियों का पंजीकरण करा दिया। Learngeeta की तरफ से जेल की library के लिये गीता अध्ययन के लिये पुस्तके भिजवाई गई।

उमेश शर्मा जी (NHRC, Rapporteur) ने गीता परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि यह उनकी कल्पना से परे है और 13 जुलाई को अपने आनंदोत्सव में उन्होंने अपनी तत्कालीन प्रशिक्षक सोनाली दीदी को ऐसी कक्षाओं की इच्छा व्यक्त की और जल्द ही सब कुछ व्यवस्थित कर दिया गया। उन्होंने गीता परिवार के स्वयंसेवकों के उत्कृष्ट कार्य की तहे दिल से प्रशंसा की। जो सच्चे समर्पण के साथ कक्षाओं की योजना और संचालन कर रहे हैं। अगले महीने, वे महिला कैदियों के लिये भी कक्षाओं की व्यवस्था करने की योजना बना रहे हैं। उन्होंने भारत की सभी जेलों में इस अद्भुत गीता की कक्षाओं को लाने की इच्छा व्यक्त की।





# Finished L4 class. What next?

Shri Sunil Kapdi, Mumbai

The first Online Geeta class started on 23rd June 2020. Since then, lakhs of learners have joined Geeta Pariwar for learning Geeta online. Most of them have already successfully completed their L4 batch and are enjoying the rich benefits of learning Geeta from an authentic and standardized source.

One thought that emerges in almost every learner's mind, is that - "What next?". They have finished their learning, and they might be practising at their home in their free time. But the main source of motivation - Being in a vibrant learners' Group, and the proximity of their beloved teacher is missing. Group activities are necessary for new learners to keep them motivated continuously, and that motivation is lost as soon as they exit their group. Keeping their WhatsApp groups intact forever is also not a viable solution. So are there any other options for those Sadhaks, who have finished their L4 batch, but would like to be part of the Geeta Pariwar in future also?

These type of questions pop up again and again in many weekly vivechan satras. Fortunately, for all of us, Geeta Pariwar already has several options for those who want to remain permanently attached with it. Following is a brief summary of such options.

## Start from L1 batch again (Or L2, L3, L4)

This is one of the best and most viable options for majority of learners. You can join L1 batch again, or you can start from L2, L3 or L4 as per your liking and comfort level. This will induce new enthusiasm in your daily Geeta practising sessions, and will also help you improve your oral skills.

For a twist, you may opt to join a batch in different language.

And then, you can just keep on repeating this process every year.

## Join as a Geeta Sevi

Geeta Pariwar is a volunteer supported organization. It does not have any paid workers or fixed work timings. So you can utilize your skills and available time to serve as a Sevi in one of the Sevi groups in Geeta Pariwar.

Some most common areas where you can utilize you skills are - Technical Assistants, Software Programmers, Graphic designers, Group Coordinator, Core Trainer and

Creative Writers. Even if you think that you do not have enough skills or time to join any of these departments, You can still join as a pracharak in Geeta Pariwar.

## Practice at home

This is not an option. This is necessary for anybody who has learned entire Geeta in his or her L1-L4 batches. It is expected that you recite at least one adhyay per day if you want to reap the benefits of Geeta. The more, the better. You also may plan to recite entire Geeta per week (Means 3 Adhyayas daily), or Monthly as per your comfort level.

But even if one adhyay is not possible daily due to some reason, start reciting next 5 shlokas per day, and then go on increasing the number of shlokas per day.

## Practice at home with your Family

Form your own personal group at home - of your own family members. Then fix a convenient time for all, and start reciting Geeta together. Start with one adhyay, or 5 shlokas as mentioned above. There is nothing like a group of common minded people doing some religious activity together.

This practice will soon change the entire atmosphere of your home, remove all negative influences, attract the positive energy and also influence the young minds in a healthy, positive way.

## Form groups in your building or residential colony

If you start with family, this step may come automatically, as your neighbours and others will soon get interested in it. You may start forming local residents' groups to recite Geeta in early Mornings, or late evenings. Encourage them to join online classes also. Experience shows that such activities soon get traction and expand in the course of time, if done persistently.

## Join other courses like Ram Raksha

Time and Again, Geeta Pariwar announce extra online learning sessions for various Stotras like Ram Raksha Stotra and Vishnu Sahasranama Stotra. Do take advantage of those sessions too and encourage your family members and relatives. Normally these courses are of short duration, so you can join them when you have free time, especially after completing L4.

In addition to above-mentioned activities, Geeta Pariwar announces many other online and offline activities that you can join. You may contact your group admins, GCs or BCs for more information on this. Additionally, all L4 participants are automatically added to special Geeta Sadhaka WhatsApp groups upon completion of their L4 training. These groups are read-only, means only Admins can post messages in them. These groups are permanent, and they keep you abreast with the latest news and activities of Geeta Pariwar.

So, now you know what options are available to you after finishing your L4 batch. Choose any or all of them, and start your spiritual journey on the path shown by Shri Krishna.



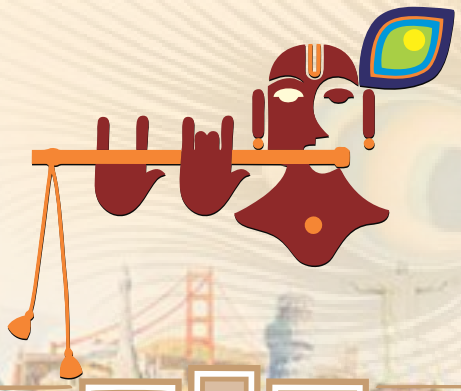


# आओ गीता खेलें

## Scrambled Shlokas

**नीचे दिए श्लोकों को सही क्रम में लगायें –**

1. नरकेऽशुचौ मोहजालसमावृताः प्रसक्ताः पतन्ति अनेकचित्तविभ्रान्ता कामभोगेषु
2. यस्य प्राहुरव्ययम् स वेदवित् पर्णानि यस्तं वेद छन्दांसि ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं
3. सुखमक्षयमश्नुते स यत्सुखम् विन्दत्यात्मनि ब्रह्मयोगयुक्तात्मा बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा
4. मामजमनादिं प्रमुच्यते असम्मूढः स च मर्त्येषु सर्वपापैः यो लोकमहेश्वरम् वेत्ति
5. देवर्षीणां नारदः चित्ररथः सिद्धानां मुनिः सर्ववृक्षाणां च कपिलो अश्वत्थः गन्धर्वाणां
6. कथं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन पापादस्मान्निवर्तितुम् दोषं ज्ञेयमस्माभिः कुलक्षयकृतं न
7. सर्वं च मे सर्वत्र न मां च तस्याहं स यो न मयि पश्यति प्रणश्यामि प्रणश्यति पश्यति
8. आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं योगारूढस्य तस्यैव कर्म कारणमुच्यते शमः कारणमुच्यते
9. नियतमानसः निर्वाणपरमां योगी मत्संस्थामधिगच्छति शान्तिं युञ्जन्नेवं सदात्मानं
10. विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति श्रेयान्स्वधर्मो किल्बिषम्
11. अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च विवृद्धे मोह च प्रमादो कुरुनन्दन जायन्ते एव तमस्येतानि
12. तमभ्यर्च्य यतः सर्वमिदं सिद्धिं विन्दति मानवः ततम् प्रवृत्तिर्भूतानां स्वकर्मणा येन
13. प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये तामसा राजसाः सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि जनाः यजन्ते यजन्ते
14. वाक्यमिदमाह सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं हृषीकेशं महीपते तदा स्थापय मेऽच्युत
15. न प्रत्यनीकेषु कालोऽस्मि भविष्यन्ति लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ऋतेऽपि येऽवस्थिताः सर्वे त्वां योधाः



## Scrambled Shlokas

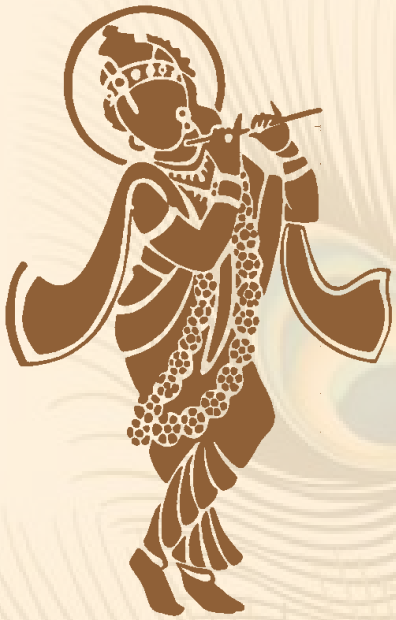
**सही क्रम –**

1. अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ
2. ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्
3. बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम् स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते
4. यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते
5. अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः
6. कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन
7. यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति
8. आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते
9. युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति
10. श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्
11. अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन
12. यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः
13. यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः
14. हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत
15. कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः



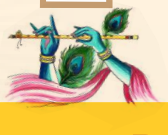
## Fill in The Blanks :

1. मनसस्तु _____ बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः
2. न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे _____ स्पृहा
3. यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति _____ सनातनम्
4. ब्रह्मण्याधाय कर्माणि _____ त्यक्त्वा करोति यः।
5. अनाश्रितः कर्मफलं _____ कर्म करोति यः
6. _____ संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः
7. शनैः शनैरुपरमेद् _____ धृतिगृहीतया
8. चञ्चलं हि मनः कृष्ण _____ बलवद्दृढम्
9. प्रयत्नाद्यतमानस्तु _____ संशुद्धकिल्बिषः
10. बलं _____ चाहं कामरागविवर्जितम्





**Ans:** 1. परा, 2.कर्म, 3.ब्रह्म, 4. सङ्गं, 5.कर्म, 6.मन:, 7.बुद्ध्या, 8.प्रमाथि, 9.योगी, 10.वर्जितं



# Volunteers' Brigade

## PATRON
P. P. SWAMI JI SHRI GOVINDDEV GIRI JI MAHARAJ

## CONCEPT CHIEF
Dr. Sanjay Malpani

## PROGRAM DIRECTOR
Dr. Ashu Goyal

## PRINCIPAL TRAINER
Sau. Suvarna Malpani, Sangamner

## PROGRAM COORDINATORS
Ms. Jyoti Shukla
Ms. Rupal Shukla
Ms. Kavita Verma

## TRAINER'S TRAINING DEPARTMENT
Smt. Vijaya Godbole, Dehradun
Shri Shrinivas Warnekar, Nagpur
Sau. Vandana Warnekar, Nagpur
Sau. Anita Sangamnerkar, Ayodhya
Shri Vikas Vaidya, Pune

## IT & SOFTWARE DEPARTMENT
Shri Pradeep Rathi, Pune
Shri Pankaj Agarwal, Lucknow
Shri Gagan Holani, Mumbai
Shri Ashish Tiwari, Chitrakoot
Shri Vivek Sinha, USA
Shri Vednath Mathur, Delhi
Smt. Minaxi Shah, Ahmedabad
Shri Manish Tomar, Morana
Shri Mitesh Khatri, Bikaner

## TRAINER MANAGEMENT DEPARTMENT
Smt. Shruti Nayak, Mumbai
Smt. Anita Ravishankar, Pune
Smt. Sheetal Salke, Pune
Smt. Manisha Bardhan, Lucknow
Shri Meennath N. Lakhote,Bhandara
Smt. Anuja Lahoti, Dubai
Smt. Mansi Ekbote, USA

## CREATIVE WRITING DEPARTMENT
Shri Vimal Jain, Calcutta
Smt. Usha Prashad, Bengaluru

## TECHNICAL ASSISTANT DEPARTMENT
Shri Suraj Sharma, UAE
Smt. Vijaya Muchhal, USA
Shri Narendra Kotak, Pune
Smt. Manisha Bharadwaj, Abu Road
Smt. Alaknanda Kulkarni, Pune
Smt. Shraddha Srivastava, Banglore
Shri Suresh Ghag,Vadodara

## LITERATURE PUBLICATION DEPARTMENT
Smt. Pooja Goyal, Lucknow (Compilation)
Shri. Valiveti Venkata Lakshmi Narayana Sharma, Visakhapatnam(AP) (Telugu)
Smt Pratyusha Sajja , (Telugu)
Shri. Suresh Kumbhar, Ugar BK (Kannada)
Smt. Shruthi Kadagaonkar, Pune (Kannada)
Smt Shruti Nayak, Mumbai(kannada)
Smt. Banusuja Ramakrishnan, Los Angeles (Tamil)
Smt. Ramesh Kumar Rateria, Calcutta (Bangla)
Smt. Mala Narayana, Coonoor (Malayalam)
Ms. Hiral Patel, Satara (Gujarati)
Smt. Paushali Ghosh, Bangalore (Bangla)
Shri Keshav Patro, Pune (Odia)
Smt. Sonali Pati, Odisha (Odia)
Smt. Neha Joshi, Bhuj (Gujarati)
Shri Tarun Gogoi, Naharkatia (Assamese)
Smt. Rekha Maru, Biratnagar (Nepali)
Shri. Narayan Shete, Coimbatore (Grammar)

## GROUP COORDINATORS DEPARTMENT
Smt. Kavita Taparia, Ahmedabad
Smt. Smita Mundada, Mumbai
Smt. Saroj Saboo, Hyderabad
Smt. Nisha Keny, Mumbai
Shri. Hanuman Prasad Baheti, Aurangabad
Smt. Vini Maheshwari, Mumbai
Shri Sunil Kapdi, Mumbai

## EXAMINATION DEPARTMENT
Shri Arun Taparia, Lakhimpur Khiri
Shri Dinesh Pandita, Delhi
Shri Santosh Singh, Indore

## BACK OFFICE DEPARTMENT
Shri Nilesh Pathade, Sangamner
Shri Datta Bhandurge, Sangamner
Ms. Vaishnavi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Janhvi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Drishti Yadav, Lucknow
Ms. Mahi Singh, Lucknow

## TELE, CHAT & MAIL HELPLINE DEPT.
Shri Siddharth Havelia, Delhi
Smt. Sarika Dhaundiyal, Delhi
Ms. Priya, Delhi
Ms. Geet, Delhi
Ms. Kajal Srivastava, Delhi

## GROUP/SCHOOL REG. DEPARTMENT
Smt. Anshu Garg, Delhi

## LEGAL DEPARTMENT
Smt. Priyanka Havelia, Delhi

## CLASS MONITERING TEAM
Smt. Shraddha Raodeo, Hyderabad
Smt. Namita Mehra, Mumbai
Smt. Upasana Zanzote, Nagpur
Shri. Munish Aggarwal, Ambala
Smt. Shashi Tripathi, Ujjain

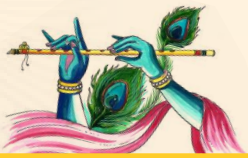
## VIVECHAN COORDINATORS
Shri Gopal Singh Nathawat, Bikaner
Smt. Neeta Aspat, Mumbai
Shri Suresh Vyas, Bikaner
Shri Deepak Gupta, Kota
Shri Sunil Dhoot, USA
Smt. Shraddha Karwa, Hyderabad

## CHINTANIKA COORDINATORS
Shri Harinarayan Vyas, Hyderabad
Smt. Kavita Mandhane, Parbhani
Smt. Nirmala Maru, Kota

## GEETA PRACHARAK COORDINATORS
Shri Geet Govind Sahu, Jagdalpur
Shri Suresh Dadhich, Mumbai

## ADMISSION DEPARTMENT
Smt. Minal Dani, Bangalore
Ms. Bhagyashri Pawnikar, Chhindwara
Shri Bhavnesh Gandhi, Mumbai

## CALLING & MIGRATION DEPARTMENT
Smt. Yogita Khinda, Mumbai
Smt. Punita Prasad, Chennai
Shri Mahesh Shewale, Mumbai



# ಕಾರ್ಯಕರ್ತಾ ಮನೋಗತ

**1.** **ಅರಿವಿನಪರಿಧಿವೃದ್ಧಿಸಿದಸೇವೆ**

ಏಪ್ರಿಲ್ **2021** ರಿಂದ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರದ ಸದಸ್ಯನಾಗಿದ್ದ ನನಗೆ ಕನ್ನಡ ಅರ್ಥ ವಿವೇಚನಾ ತಂಡದ ಸಂಯೋಜಕನಾಗಿ ಸೇವೆ ಸಲ್ಲಿಸುವ ಅವಕಾಶ ದೊರಕಿದ್ದು ಆಕಸ್ಮಿಕ ಹಾಗು ಅನಿರೀಕ್ಷಿತ. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಕೃಪೆಯಿಂದ ಒದಗಿಬಂದ ಈ ಸೇವಾವಕಾಶ ನನ್ನ ಅರಿವಿನ ಪರಿಧಿಯನ್ನು ಮತ್ತು ಹೊಣೆಗಾರಿಕೆಯನ್ನು ವೃದ್ಧಿಸಿದೆ. ವಿಭಿನ್ನ, ವಿನೂತನ ಮಾರ್ಗಗಳನ್ನರಸಿ ಪ್ರತಿಕೂಲ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ನಿಭಾಯಿಸುವ ಕೌಶಲ್ಯ ಕಲಿಸಿದೆ. ಹಲವಾರು ಪ್ರಬುದ್ಧ ಗೀತಾಸೇವಿಗಳ ಸಂಗ ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಟ್ಟಿದೆ.

ಸುದೀರ್ಘ ಕಾಲದವರೆಗೆ ಸಂರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ ಹಾಗು ಆಸಕ್ತ ಸಾಧಕರ ಜ್ಞಾನ ದಾಹವನ್ನು ತಣಿಸುವ ವಿವೇಚನಾ ಸಾರಾಂಶಗಳನ್ನು ದಾಖಲಿಸುವ ಸೇವಾ ಭಾಗ್ಯ ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಟ್ಟ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರದ ಸಕಲರಿಗೂ, ತಂಡದ ಎಲ್ಲ ಸದಸ್ಯರಿಗೂ ನತಮಸ್ತಕನಾಗಿ ನಮಿಸುತ್ತೇನೆ.

ಜೈ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ



ಮಂಜುನಾಥ ಡಿ. ಎಸ್.

**2.** ગીતાજી.... નામ માત્રને માનસિક સાષ્ટાંગ દંડવત્ પ્રણામ થઈ જાય... ગીતાજીમાં એવું શું છે કે અધરો કોયડો લાગવા છતાં તેને સમજવા તરફ મન-બુદ્ધિ ખેંચાયા કરે છે? આવા અને અન્ય પ્રશ્નોના સરળતમ જવાબોથી દૈનિક જીવનની સમસ્યાઓના ઉકેલ માટે સહાયક ગીતા પરિવાર શ્રેષ્ઠતમ સ્થાન છે. શુદ્ધ ઉચ્ચારના મહત્ત્વથી શરૂ કરીને ગીતાજીને દૈનિક જીવનમાં વણવાના પ્રયાસો કરાવતા આ પરિવાર માટે ઈશ્વરની અને પરમ શ્રદ્ધેય સ્વામીજીની આજીવન ઋણી છું.



જાગૃતિબેન ત્રિવેદી

**3.** **Joining Geeta Pariwar has had a major impact on my life.**

Like many others I was raised to speak the truth. But as I grew up I would often say truthful but hurtful things to others without feeling much remorse. But the Bhagavadgita verse

17: 15 that says penance of speech includes not just speaking the truth but also making sure the spoken words don't hurt others are agreeable and beneficial to the listener had such an impact; since then have been trying to bring this into practice.

Offering seva in Vivechan summary writing has brought a whole new depth to my understanding of the BhagvadGita..

Earlier I thought it was unnecessary to rote learn the shlokas. But now I recall the shlokas that I memorized in different situations and they help in taking decisions and help put the teachings into practice.



Jyotsna Ranade

**4. Jay Shri Krishna**

With the grace of Shri Krishna, I was directed to this mission, by one of my friends. When I joined the Learn Geeta Classes, I wanted to just pronounce the Sanskrit Shlokas perfectly as I had grown up listening to chants of Chapter 12 and 15 from my father daily. But when I offered to be a Geeta Sevi to write Vivechan Summary, I was proud of my writing/editing abilities.

After spending almost an year, writing summaries, Shri Krishna shattered my ego and has made me aware of my Tamsic and Rajasic tendencies, which I need to curb and direct them towards Satwik Gunas. Our Vidvan Vivechaks make the understanding of the most difficult shlokas easy, by relating them to our daily lives and giving examples from Dhyaneshwari, Ram Charit Manas, MahaBharat and our scriptures. Today I feel privileged to be given this opportunity to serve Geeta Parivar and through them the humanity and my humble pranams at the lotus feet of Shri Krishna, for selecting me for this Seva.

Jayshree Sampat

**5.** వివేచనకార్యక్రమములలోపాలుపంచుకొనుటవలనవివేకవర్ధనము, విచక్షణాజ్ఞాన వృద్ధి, వ్యక్తిత్వవికాసము, వ్యష్టి సమిష్టి , కర్మ అకర్మ మొ. అనేకాని మూలతత్త్వ విషయాలలో అవగాహనాభివృద్ధి పెంపొందుతుంది , అని చెప్పుటలో ఎటువంటి సందేహము లేదు. ఇది నా స్వకీయ అనుభవము. ఈ అవకాశము నాకు కలిగించినందుకు ఎల్లప్పుడూ నేను గీతాపరివార్ కు , పరమపూజ్య గురుగోవింద గిరీ జీ మహరాజ్ గారికి ఋణపడి ఉంటాను. కావున అందరికీ సవినయంగా మనవి చేయునది ఏమనా, ఈ వివేచనలను వ్రాయటంలో భాగస్వాములై తరించి , ఇరుగు పొరుగు వారిని కూడా తరింపజేయండి.

VVLN Sarma

**6.** গীতা পাঠ কৰবিলৈ শকিমি বুলি ভাবোঁতেই গীতা পৰিয়ালৰ পৰা গীতা শকিবিলৈ লিংক এটা পালোঁ আৰু লগে লগে পঞ্জীয়ন কৰিলোঁ। যোৱা বছৰ (২০২১) এপ্ৰিলত। প্ৰশিক্ষক আছিল ৰূপল শুক্লা বাইদেউ। অন্যান্য ব্যস্ততাৰ বাবে সহেবাৰ এটা নে দুটা শ্ৰেণীহে কৰবি পাৰিলোঁ।

মন বান্ধি লছিলোঁ পছিৰ বাৰ ভালদৰে শকিমি। পছিৰ মাহত আকৌ পঞ্জীয়ন কৰিলোঁ। শ্ৰেণী আৰম্ভ হ'ল। আমাৰ ল'ৰা ছোৱালী হমিকৰিণ আৰু নয়িৰকণাৰ লগত একলেগে অতি উৎসাহেৰে শকিবিলৈ ললোঁ।

লভেলে 1-ৰ শষেৰ ফালে আমি তনিওটাই গীতা গ্ৰঞ্জন পৰীক্ষা দি উত্তীৰ্ণ হলোঁ। মই এটা নয়িম বান্ধি লছিলোঁ। আমাৰ যকিহেটা অধ্যায় শকিা হয়, সহে অধ্যায় কহেটা কমণে এবাৰকৈ পাঠ কৰমি। এইক্ষত্রেত আমি কাকীজীৰ অডিও' বজাই হাতত পডিত্রিফ-ৰ প্ৰণিট আউট হাতত লৈ পাঠ কৰছিলোঁ। এইক্ষত্রেত ল'ৰা-ছোৱালীহঁতৰ বাবে এটা নয়িম বান্ধি দছিলোঁ - আমাৰ সুনৰিদষ্টি গীতাৰ অধ্যায় কহেটা পাঠ নকৰাকৈ টভি, কম্পউিটাৰ বা মোবাইল চাব নোৱাৰবি। এই নয়িমৰ বাবে তওঁলোকে শুনকালে পাঠ শষে কৰি লছিলি।

লভেলে 1 শষে হ'ৱাৰ পাছত লভেলে 2 আৰম্ভ হ'ল আৰু আমি একে উৎসাহৰে শকিবিলৈ লল'াঁ। নতিৌ গীতাৰ অধ্যায় পাঠ কৰা নয়িমটি'ে চলি থাকলি। নতুন অধ্যায় শকিা শষে হ'ৱাৰ লগে লগে সদায় পাঠ কৰা অধ্যায়ৰ সংখ্যাও এটা এটাকৈ বাঢ়ি যাবলৈ ধৰলি।

ইয়াৰ মাজতে আমি প্ৰস্তুতি চলাই গীতা জজ্ঞিাসু পৰীক্ষাত অৱতীৰ্ণ হৈ উত্তীৰ্ণ হ'ল'াঁ। ১১ বছৰীয়া হমিকৰিণে ৯৯%, ৭ বছৰীয়া নয়িৰকণাই ৯৭% আৰু মই আটাইতকৈ কম ৯৫% পাল'াঁ।

গীতা পৰৱিাৰৰ গীতা শক্ষিা বনিামূলীয়া। গীতা শকিাৰ বনিমিয়ত কবিা দয়িাৰ ইচ্ছা আছলি। তনেতে 'গীতা সৰৌ'-ৰ বষিয়ে গম পাল'ো আৰু ছপ্টেম্বেৰৰ মাহত টকৈনকিলে এছছিটণ্টে ৰূপে সৰো প্ৰদান কৰাৰ সুবধিা লাভ কৰ'াঁ। পাছলৈ অন্যান্য বভিন্নি ৰূপত সৰো দয়িাৰ লগতে ২০২২ চনৰ মে মাহত আৰম্ভ হ'ৱা প্ৰথম অসমীয়া গীতা শক্ষিণ বটে্চৰ প্ৰশক্ষিক ৰূপে যে'গদান কৰবিলৈ পাওঁ।

গীতা পৰৱিাৰৰ হৈ সৰো আগবঢ়ায় সময়ত এক বশিষে লাভ হছৈলি। তাত বভিন্নি ব্যক্তৰি লগত সংযে'গ হছৈলি, যসিকলে নতিৌ গীতাক জীৱনত প্ৰয়ে'গ কৰ। এই সকল ব্যক্তৰি সান্নধি্য অনন্য। এইসকল ব্যক্তৰি পৰা গীতা কনেকৈ জীৱনত প্ৰয়ে'গ কৰবি পাৰি তাক শকিাৰ সৌভাগ্য হছৈে।

আহক আমি সকল'ৱে গীতা শকিাত, গীতা শকি'ৱাত আৰু গীতা জীৱনত প্ৰয়ে'গ কৰাত আৰু অলপ বছেি সময় দওঁি। ব্যস্ততাৰ মাজতে'া ইয়াক কৰলিে আমাৰ সময়ৰ সুব্যৱহাৰৰ আৰু সু-বনিয়ি'োগ হ'ব।

Tarun Gogoi

**7.** କରୋନା ଯୋଗୁଁ ଯେଉଁ ସମୟରେ ସମଗ୍ର ବିଶ୍ୱ ଭୟର ବାତାବରଣରେ ଗତି କରୁଥିଲା, ସେହି ସମୟରେ ଗୀତା ପରିବାର ର ସଂସ୍ଥାପକ ପୂଜନୀୟ ଗୁରୁଦେବ ସ୍ୱାମୀ ଶ୍ରୀ ଗୋବିନ୍ଦଦେବ ଗିରିଜୀ ମହାରାଜଙ୍କ ଆଶୀର୍ବାଦରେ ଅନଲାଇନ ଗୀତା ଶ୍ରେଣୀର ଶୁଭାରମ୍ଭ ହୋଇଥିଲା।

ମୁଁ ଜଣେ ବନ୍ଧୁଙ୍କ ଠାରୁ ଗୀତା ପରିବାର ର registration link ପାଇ January 2021 ରେ L1 ରେ join କଲି। ମୋ ସହିତ ମୋର ସହଧର୍ମିଣୀ ମଧ୍ୟ

join କଲେ। ତା'ପରେ ନିରବଚ୍ଛିନ୍ନ ଭାବରେ L4 ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ join କରିକି ସମାପ୍ତ କଲୁ।

April 2021 ରେ Technical Assistant ଭାବରେ ସେବାକାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭ କଲି। ସମସ୍ତ L1 ରୁ L4 ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କକ୍ଷାରେ ସେବା ପ୍ରଦାନ କଲି।

Technical Assistant ସେବା ସହିତ ପ୍ରଶିକ୍ଷକ ସେବା ଦେବାପାଇଁ ମନସ୍ଥ କରି ଗୀତା- ଜିଜ୍ଞାସୁ ପରୀକ୍ଷା ରେ ଶତପ୍ରତିଶତ ମାର୍କ ରଖି ପ୍ରଶିକ୍ଷକ ରୂପେ ସେବାକାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭ କଲି।

ବର୍ତ୍ତମାନ L3 ଓ L1 ଶ୍ରେଣୀରେ ପ୍ରଶିକ୍ଷକ ସେବା ପ୍ରଦାନ କରୁଛି। ଏହା ସହିତ ସମ୍ବାଦ ଅନୁବାଦକ ସେବା ତଥା ଗୀତାଜିଜ୍ଞାସୁ ଓ ଗୀତାପାଠକ ପରୀକ୍ଷାର ପରୀକ୍ଷକ ଭାବରେ ମଧ୍ୟ ସେବା ପ୍ରଦାନ କରୁଛି। ମୋ ସହଧର୍ମିଣୀ Technical Assistant ଭାବରେ ସେବା ପ୍ରଦାନ କରୁଛନ୍ତି। ନୂତନ ସାଧକମାନଙ୍କୁ ଏହି ଗୀତା ପରିବାର ସଂସ୍ଥାରେ ଯୋଗଦେବାପାଇଁ ଆମେ ଅନବରତ ଚେଷ୍ଟା ଓ ପ୍ରଚାର କରୁଛୁ।

ଗୀତା ପରିବାର ର ଲକ୍ଷ୍ୟ "ଗୀତା ପଢନ୍ତୁ, ପଢାନ୍ତୁ ଓ ଜୀବନରେ ଆପଣାନ୍ତୁ", ଆମ ଜୀବନର ଲକ୍ଷ୍ୟ ହୋଇଯାଇଛି। ଗୀତାର ପ୍ରତ୍ୟେକ ଶ୍ଲୋକରେ ମହତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଅର୍ଥ ଓ ଦିଗଦର୍ଶନ ନିହିତ ଅଛି। ଏହାର ମର୍ମ ବୁଝିପାରି ଜୀବନରେ ଆପଣାର କରି ପାରିଲେ ଜୀବନ୍ମୁକ୍ତି ଶିରୋଧାର୍ଯ୍ୟ।

ଗୀତା ପରିବାର ଆମର ଜୀବନର ଲକ୍ଷ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତିର ମାର୍ଗଦର୍ଶକ। ସେଥିପାଇଁ ପରମପୂଜ୍ଯ ସ୍ୱାମୀଜୀଙ୍କ ଚରଣ ରେ ଆମର କୋଟିକୋଟି ପ୍ରଣାମ।

ଧନ୍ୟବାଦ ଗୀତା ପରିବାର

ତୁଳାରାମ ପଟେଲ
ଝାରସୁଗୁଡା, ଓଡିଶା

8. गीता सिकाई कक्षाको तह 1नेपाली भाषा समूहको आजको आनन्द उत्सव समारोह मा मलाई बोल्ने अवसर दिनु भएकोमा

हार्दिक आभार व्यक्त गर्न चाहन्छु।

सर्वप्रथम आदरणीय पुज्य गुरुजी स्वामी गोविन्द देव गिरी महाराज जी जसले गीता परिवारको अवधारणा ल्याउनु भयो वहाँ प्रति हार्दिक नमन एवम् प्रणाम गर्न चाहन्छु।

20 दिनमा गीता कण्थस्थ गर्न सकिने सामाजिक सञ्जालमा आएको एउटा सानो सन्देशबाट प्रभावित भएर सस्कृत भाषाको कत्ति पनि ज्ञान नभएका सहभागी यो कक्षामा जोडिन आएका थियौ। जव म एउटा सानो कक्षामा जोडिए तव मलाइ ज्ञान भयो म त एउटा बिशाल गीता परिवारको सदस्य भएछु। तह एकको 20 दिनको कक्षामा सहभागी भई भगवान श्रीकृष्णको दिब्य वाणी बाट प्रादुर्भाव भएको ज्ञानको अपार भण्डार गीता शुद्धसंग उच्चारण को अभ्यास गर्न पाउदा मेरो मन अति नै प्रसन्न भएको छ, आनन्दित भएको छ।

हरेक अक्षर अक्षर ,वाक्य,वाक्य श्लोक केलाइ केलाइ बाचन गर्ने, समूहमा गर्न लगाउने र सहभागीहरुलाई व्यक्तिगत रुपमा वाचन गर्न लगाउनका साथै अडियो मुल्याङ्कन समेत गरेर तत्काल पृष्ठपोषण प्रदान गरी हाम्रो मुख, मन र मस्तिष्कमा भगवद्गीता लाई राख्र सहयोग गर्नु हुने आदरणीय प्रशिक्षक दिदी लक्ष्मी उपाध्याय ज्यूलाई पनि हार्दिक धन्यवाद दिन चाहन्छौ।

कक्षामा प्राविधिक रुपमा समन्वय गरिदिनु हुने आदरणीय गोपाल कृष्ण दादा प्रति मुरीमुरी धन्यवाद दिन चाहन्छौं। उँहाले हामीलाई प्रत्यक्ष रुपमा कक्षा म सहभागी भएको झै गरी प्राविधिक रुपमा समन्वय गरिदिनु भयो।

नियमित कक्षा वाहेक हरेक शनिबार गीता विवेचना कक्षाबाट गीताको मर्म महत्व र आवश्यकता सहित हरेक श्लोकको व्याख्या सुन्ने अवसर पायौं। गीता विवेचना मार्फत हामीलाई गीता यात्रामा उत्प्रेरित गर्ने गीता परिवारका राष्ट्रिय उपाध्याक्ष गीता बिशारद डाँ आशु गोयलज्यू लगायत सबै गुरुवर्ग तथा प्रशिक्षक ज्यूहरुलाई हार्दिक हार्दिक धन्यवाद दिन चाहन्छौ।

हरेक आइतवार व्याकरण कक्षामा सहभागी हुदा व्याकरण कक्षामा ह्रस्व, दीघ, अनुस्वार, बिशिष्ट वर्ग, विसर्ग, सन्धि र अवग्रहको उच्चारणको अभ्यास सहित गीता श्लोकको उच्चारण गर्ने अभ्यास गर्न पायौं। व्याकरण कक्षा को प्रशिक्षक प्रति हार्दिक आभार व्यक्त गर्न चाहन्छु।

गिता पढ्न पाए हुन्थ्यो भनी मनमा मात्र लिएर बसेका हामी सहभागीलाई कक्षाको सूचना दिने देखी लिएर अन्तिम मुल्याङ्कन सम्मको कार्य गर्न गिता परिवारका बिभिन्न 10 बिभागका सदस्य तथा प्रमुखज्यूहरुले दिनु भएको निस्वार्थ सेवा प्रति हामी सहभागीहरु आभारी भएका छौ । तपाईहरुको सेवा भावनाबाट प्रभावित भै म लागायत कयौ सहभागीहरु बिभिन्न बिभागमा जोडिएका छौ । स्वयम म टेक्निकल असिस्टेष्टेन्टमा सेवा गर्न ईच्छुक भै हाल तालिममा सहभागी भै रहेको छु ।

सुबर्णा काकीको अडियोको माध्यमले हाम्रो अनुपठन अभ्यासलाई तिखार्नमा ठुलो सहयोग मिलेको छ । उहालाई पनि हार्दिक धन्यबाद दिन चहान्छौ । अबको यात्रा तह 2 को लागि हुनेछ । अब हामी निरन्तर गिताको श्लोकलाई पच्छाई रहनेछौ । यो म लगायत हामी सबै सहभागीहरुको प्रतिवद्धता हो ।

रामप्रसाद अधिकारी

तह 1 को सहभागी

कपन काठमाडौ नेपाल



# गीतावृती


Smt. Adalja Dharmisthaben Rameshbhai


Shri Aditya Mungila


Smt. Akhila Praveen


Shri Ambadas Bhawar


Sau. Anita Dattatray Tupkari


Smt. Anju Maheshwari


Smt. Ansuyaben Suryakantbhai Thakkar

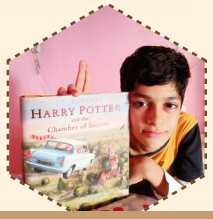

Smt. Anuradha Sanket Rahatade


Smt. Archana Bhide


Sau.Archana Dilip Patil


Dr. Archana Vikas Autade


Smt. Archana Vinodkumar Indani



Shri Arnav Inani


Smt. Arti Sood


Smt. Aruna Deepak Mahajan


Smt. Aruna Dilip Saoji


Smt. Asha Rajendra Ghumatkar


Sau. Ashwini Vinay Lele


Ms. Asmita Pawar


Shri Atharva Manmohan Zanwar


Shri Avadhoot Anand Kahalekar


Shri Ayush Kothagundla


Smt. Babita Mittal


Smt. Bhagti Kapoor


Smt. Bharathi K


Dr. Bindu Agrawal


Smt. Chanchal Taori


Sau. Charuta Wadegaonkar


Smt. Chhabi Mahanti


Shri Darshan Khandelwal


Shri Datta Rambhau Kedare



Daxa Mukund Bhai Patel


Smt. Daxa Naik


Shri Aditya Mungila


Smt. Daxaben Pradipkumar Vashi


Shri Deepak Harshal Nagle


Shri Deepak Madhav Walimbe


Sau. Deepti G Mhapsekar


Ms. Dhanshree Anant Diwan


Smt. Dimple R Dikshit


Ms.Garima Ravi Achaliya


Smt. Gayathri Devi S


Smt. Gitika Bajaj


Smt. Gunjan Gupta


Smt. Harini S


Ms. Harshika M R


Smt. Jagruti Niranjan Travadi


Ms. Janhavi Milind Dekhane


Smt. Jayaben Mansukhbhai Dhudashia


Sau.Kalpana Dinkar Patil


Smt. Kiran Jain


Sau. Kirti Kishor Kondawar



Smt. Kirtida Ajay Gheewala



Shri Krishnan R



Ms. Krupa Kishorbhai Thakkar



Shri Krushna Digambar Shinde



Sau. Kusum Hari Borle



Smt. Kusum Maru



Ms. Lata Mahajan



Smt. Lata Singh



Sau. Lohar Shubhada Dhananjay



Smt. Madhura Upendra Vaidya




Madhuri Arvind Chaudhari



Smt. Madhuri Madhukar Nanajkar



Shri Makarand Anand Phadke



Smt. Malathi M Kini



Sau. Manisha Rajendra Borkar



Smt. Meeira Rangachary



Sau. Minal Sharad Barhate



Smt. Mrudula Anil Deshpande



Shri Namdev Hari Jadhav



Dr. Nilima Chincholikar



Sau. Nilima Nene



Nirmala Sadashivrao Upadhye



Smt. Nirmla Umesh Shah



Sau. Pranita Devraj Majmudar



Smt. Padmavathi P



Sau. Pallavi Prashant Singh



Shri Pradyota Arun Kumar


Smt. Pratibha Khamamkar


Ms. Prisha Lara


Smt. Priyamvada Ganeshanand Abhyankar


Shri Pushkar Amol Kanegaonkar


Smt. Pushpabai Mallikarjun Kurle


Shri Rajendra Kumar Saboo

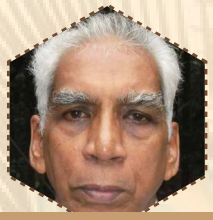

Shri Ramesh Kumar Rateria


Smt. Ranjana Parulkar


Shri Ravindra Nagarkar


Smt. Renu Karwa


Smt. Rupal Sandeep Joshi


Shri S Ganapathi Bhat


Smt. S Hari Samhitha


Shri Sadashiv Rajaram Apte


Shri Samar Rajendra Sawant


Shri Samarth Rathi


Smt. Saryubala Pravinchandra Desai


Shri Sasidharan Krishnan Nair


Shri Satish Chandra


Sau. Savita Gajanan Sangekar


Smt. Savita Sethi


Sau. Seema Choudhary


Smt. Shailaja Chandranath Shirwaikar


Smt. Shailaja Ramesh Chaudhari


Smt. Shailaja Udaysingh Pisal Deshmukh


Shri Sharad Govind Barhate


Shri Sharad Vishwanathrao Dhabe


Smt. Shardaben Pratapbhai Solanki


Smt. Sheela Mangilalji Navandar


Sau. Sheela Shamraj Pathak


Shri Shinde Dnyaneshwar Dattatraya


Sau. Shobha Kulkarni


Ms. Shravani Rajesh Naik


Shri Shreeram Sharma


Sau. Shyamali Shekhar Saraf


Shri Subhash Sarda


Smt. Suchitra Bhattacharya


Smt. Suchitra Kane


Smt. Sujata Santosh Nagapurkar


Sau. Sulabha Uday Kulkarni


Smt. Sunita Deepak Sharma


Sau. Sunita Kale


Sau. Sunita Maruti Sarade


Sau. Sunita Nagnath Joshi


Sau. Surekha Shailesh Kulkarni


Shri Surendra Ranganath Kulkarni


Shri Suresh Sitaram Borate


Smt. Suvarna Khanwalkar


Ms. Swarnima Yogeshchandra Kulkarni


Sau. Swati Sanjay Kulkarni


Tanvi Desai


Shri Uddhav Neeraj Jawale


Smt. Ujwala Shrikant Zambre


Smt. Usha Sharad Dhabe


Sau. Vaishali Sudharma Dalvi


Sau. Varsha Jayant Barve


Sau.Varsha Milind Kulkarni


Sau. Vidya Sanjay Kotgire


Shri Vinayak Harihar Huddar


Ms.Vinodini Bharat Chaudhary


Shri Abhang Vitthal Madhav


Shri Abhinav Sharma


Shri Aditya Pawar


Shri Ajit Narayan Kakade


Shri Anany Vitthal Madhav


Smt. Anchal Maheshwari


Smt. Anuradha Prashant Ranade


Smt. Asha Lata Shah


Shri Balakrishna Ranade


Shri Bhagavatbhai Vaghela


Smt. Chhaya Milind Adhavalkar


Shri Datta Rambhau Kedare


Shri Devidas Moharil


Smt. Jayaben Jani

Jayanthi. A


Smt. Jyotsana Abhani


Dr. Kamini Sunil Mehta


Smt. Kavita Mandar Nerlekar


Shri Keshavamurthy


Shri Kiran Telang


Smt. Kumud Gupta


Laxmi Upadhyaya

Manju Agarwal


Mudra Rajendra Sawant


Shri Nagesh Prabhu


Smt. Neera Handa


Shri Nikunj Amit Rathi


Shri. Om Sudhir Chidrawar


Smt. Padma Haridasji Tapadia

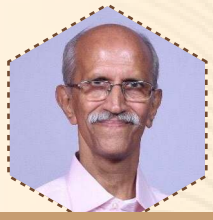

Shri Pandurang Narayanrao Jungare


Smt. Parinita Nandu Durge


Shri Pradeep Agrawal


Smt. Prerana V


Ms Radha C Kaikini


Shri Ravindra Sukthankar


Smt. Rupa Maheshkumar Zariye


Smt. Sampreeta Hegde


Shri Sanjay Kumar Rastogi


Smt. Sarita Bajaj


Smt. Sarita Rajeev Phadnavis


Savitha K V


Smt. Shailaja Arun Rahurkar


Smt. Sharda Ramdas Langhe


Smt. Sharmila Padmakar Deshmukh


Smt. Sheetal Kashinath Deshpande


Ms Shreevani S Nadig


Shri Shrihith Yaji


Smt. Smita Nishikant Gajare


Smt. Sunita Bharat Vasantgadkar


Ms Swanandi Makarand Mahajan


Smt. Ujwala Girish Kulkarni


Smt. Ulka Deshpande


Smt. Unnati Upadhyaya


Smt. Usha Subramanian


Vandana Jhanwar


Smt. Varsha Shivajirao Saraf


Smt. Vasudha Gokhale


Smt. Vasudha Maroo


Veena Chugh


Vijaya Kate (Bhosale)


Smt. Vijaya Pralhad Chaudhari


Shri Vishnu Madhav Shejwalkar


Ms Yogita Bipin Kharade


Smt. Aasawari Kiran Sathe


Smt. Anuja Jayant Pingle


Shri Bhairab Chattopadhyay


Ms Diya Deshmukh

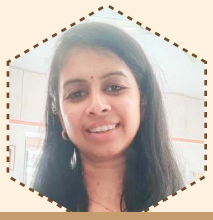

Sau. Shalini Pathak


Smt. Shubhangi Satish Patel


Sau. Vaishali Vinayak Samant


Ms Vidhu Kacholia


Shri Vishal Sharma


Ms Usha Pradeep


Ms Ishita Vasanth Achar


Smt. Vijayashri R

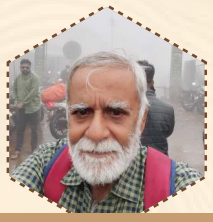

Ms Manasvi Sharma


Smt. Surabhi Mhatre


Shri Balaji


Smt. Ansuya Shah


Ms Reecha Rajendra Patel


Shri Vijay Chunilal Balsara


Ms Daxa Karia


Shri Ramkrushna Damodarbhai Adhiya


Smt. Sunita Pansari


Smt. Kiran Gaggar


Shri Ambadas Bhawar


Smt. Shibani Mahato


Smt. Kanchan Kharloya


Sau. Padma Sharma


Smt. Rama Verma


Smt. Alka Gupta


Smt. Vinita Choudhary


Shri Kriti Bardhan Gupta


Shri Prem Chand Lal


Sau. Vishnukanta Omprakash Baheti


Smt. Puja Sharma


Smt. Vaishali Potdar


Shri Munish Aggarwal


Smt. Sonia Gupta


Ms. Nakshi A Vyas


Smt. Saroj Agrawal


Smt. Bindu Somani


Smt. Shashi Gupta


Shri V Srinivasan


Smt. Arati Vijay Joshi


Smt. Swathi Ural


Smt. Veena N


Smt. Akshatha Nayak


Smt. Vidya Vinayak Hegde


Smt. Archana Rajesh



Jnanitha A Shetty


Smt. Karthyayini M D


Smt. Shailaja Janardan Chaudhari


Shri Prasad Ramchandra Kulkarni


Sau. Suchita Anand Kashikar


Smt. Manjusha Vaishampayan


Ms. Rajeshwari Umesh Kondawar


Smt. Rekha Shrikant Inamdar


Smt. Shubhada Bhalchandra Patwardhan


Shri Anil Prabhakar Bandishti


Shri Darsh Vijay Kalhe


Smt. Minakshi Hanmant Joshi


Shri Anagha Prakash Ganapule


Sau. Dhanada Laxman Deodhar


Shri Ramchandra Pandurang Diwakar


Sau. Anita Tantak


Smt. Shashilekha Gajendragadkar


Smt. Sundarbai Mothabhau Ahire


Ms Manjiri Sharad Parasnis


Sau. Sangeeta Ashok Deshpande


Shri Dattatray Giridhar Kulkarni


Sau. Vandana Santosh Volvoikar


Shri Atul Kulkarni


Sau. Vandana Vinayak Deshpande


Sau. Varsha Pravin Mahajan


Ms. Kapse Sakshi Bhagwan



Sau. Sawant Alka Sanjay



Sau. Megha Shashank More



Shri Vishnu Jagannath Gaikwad



Dr Prakash Kolhe



Smt. Anjali M Joshi



Ms Renuka Samir Joshi



Shri Sudhir Prabhakarrao Chati



Smt. Usha Sreekumar Nair



Sau. Vaishali Sadanand Nagapurkar



Smt. Surekha Sitaram Kamath



Shri Guduru Narender Reddy



Smt. V V Laxmi



Smt. Suryakumari Kotagiri



Smt. Usha Bhagavatula



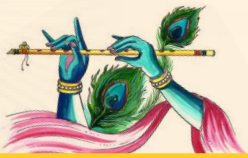
Sau. Kalpana Panditrao



Shri Sreenivasulu Reniguntla



Archana Jagdiish Rathi



# आँकड़ों की नज़र में ...



Geeta Sewi Volunteers across the globe 4,500

Registered Participants from 134 Countries 457,306

Geeta Classes Conducted yet 2,21,534



**Extra Classes**

Gītā Guñjana - 84
Gītā Jijñāsu - 72
Gītā Pāṭhaka - 78
Gītā Pathika - 106
Gītā Vratī - 40

**Grammar Sessions**

Hindi - 33
English - 17

**Total Vivechan Sessions**

Hindi - 616
English - 195

**Total Passed in Examination**

Gītā Jijñāsu - 18,833
Gītā Pāṭhaka - 5,451
Gītā Pathika - 1,308
Gītā Vratī - 584







www.geetapariwar.org
learngeeta.com

+91 2425 222299
+91 2425 225011

All rights reserved,
Geeta Pariwar, Sangamner
Maharashtra-433605

https://www.learngeeta.com/

https://www.youtube.com/@GeetaPariwar

https://www.facebook.com/geetaparivar

https://mobile.twitter.com/Learn_Geeta/

https://www.instagram.com/geetaparivar/



LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन